RNI No. : UPHIN/2017/74695

डाक पंजीकरण सं. :
एस.एस.पी./एल.डब्लू./एन.पी. - 558/2018-2020

स्टूडियो न्यूज

वर्ष : 4 अंक : 01 | लखनऊ, सोमवार, 6 जुलाई 2020 से 5 अगस्त 2020 | पृष्ठ : 16 | मूल्य : 10 रूपये

सम्पादक की कलम से ...

मेरे फोटोग्राफर साथियो,

साथियो स्टूडियो न्यूज़ के जुलाई 2020 अंक के साथ हम आपके समक्ष है। आप लोगो के सहयोग से आपका स्टूडियो न्यूज 3 वर्ष पूर्ण कर चौथे वर्ष में प्रवेश कर रहा है। आप सभी के सहयोग के लिए स्टूडियो न्यूज़ की पूरी टीम आपको हृदय से धन्यवाद देती है एवं इसी तरह आगे भी ये सहयोग और साथ बना रहेगा ऐसी ईश्वर से कामना करते हैं। स्टूडियो न्यूज़ की यहाँ तक की यात्रा में फोटोग्राफी से जुड़े सभी लोगो का सहयोग है, बिना आप सब के सहयोग के ये यात्रा करना संभव नहीं है। आप सभी लोगों से गुजारिश है कि अपनी बात साथी फोटोग्राफर्स भाइयों तक पहुँचाने में स्टूडियो न्यूज़ को माध्यम बनायें। आशा है आप सभी साथी ज्यादा से ज्यादा इसका उपयोग अपने फोटोग्राफी व्यवसाय को आगे बढ़ाने में करेंगे।

कोविड 19 महामारी सभी व्यवसायों पर कहर बरपा रही है, फोटोग्राफी इससे अछूता नहीं है। साथियो सर्वप्रथम हम लोगों को अपनी सेहत की चिंता करनी है। सरकार द्वारा दिए गए निर्देशों का पालन कीजिये तथा जब तक जरूरी न हो अपने घर से बाहर न निकलें। अपने ऑफिस या स्टूडियो पर सेनिटिज़ेशन के पुख्ता इंतेज़ाम कीजिये, ये समय जागरूक रहने और बाकि लोगों को जागरूक करने की जरूरत है तभी हम इस कठिन चुनौती का सामना कर पाएंगे। अपने कार्य को सावधानीपूर्ण कीजिये क्योंकि आपका सावधान रहना आपके परिवार को सुरक्षित रखता है। साथियो धीरे-धीरे काम की शुरूआत हो चुकी है इसलिए भविष्य के प्रति आशावान बनिए, जल्द ही हम सभी लोग इस मुश्किल समय से बाहर आ जायेंगे। इस मुश्किल समय में आप अपने इक्विपमेंट से दोस्ती कीजिये और उसको ज्यादा से ज्यादा जानने की कोशिश कीजिये। जब तक हम अपने इक्विपमेंट को 80% नहीं जानेगे तब तक हम उसके मूल्य का सही इस्तेमाल नहीं कर पाएंगे। आप चाहे कितना ही लेटेस्ट या महंगा इक्विपमेंट लेलें, अगर आप उसका 80% इस्तेमाल नहीं कर पा रहे हैं तो समझिये कि आप अपना पैसा बर्बाद कर रहे हैं। साथियो एक बात को समझिये प्रोफेशनल इक्विपमेंट जो आप गाइड करते है वो परफेक्शन के साथ उसको अंजाम देता है परन्तु अगर आप खुद कुछ नहीं जानते तो आप उसको क्या कमांड देंगे। इक्विपमेंट अपने आप कुछ नहीं करेगा, बिना आप के वो केवल एक शोपीस है इसलिए इस समय जब आपके पास अपने लिए बहुत समय है आप अपने तकनीकी ज्ञान को बढ़ाइये, ज्यादा से ज्यादा पढ़िए, अपना भी ज्ञान अर्जित कीजिये तथा अपने साथियो को भी बताईये। साथियों समय तो बीतेगा ही चाहे आप उसका उपयोग अच्छे कार्य में लगाइये या फिर उसको ऐसे ही बीत जाने दीजिये, ये आपके विवेक के ऊपर है। आने वाले समय में इस व्यवसाय में वही लोग सर्वाइव करेगें जो मेहनत के साथ-साथ तकनीकी रूप में भी दक्ष होगे। जीवन में हमेशा पॉजिटिव अप्रोच को अपनाइये, सदैव याद रखिये सत्य परेशान हो सकता है परन्तु पराजित नहीं।

आप सभी अपना एवं अपने परिवार तथा मित्रों का ख्याल रखिये। साथियो मिलजुल कर इस मुश्किल समय का सामना कीजिये। शेष अगले अंक में।

सुरेंदर सिंह बिष्ट
सम्पादक

विश्व फोटोग्राफी दिवस के उपलक्ष्य में अवध फोटोग्राफिक सोसायटी द्वारा आयोजित फोटो प्रतियोगिता

हम में से हर एक में एक फोटोग्राफर छिपा हुआ है। यदि आप हमारी बात पर विश्वास नहीं करते हैं, तो बस अपने इंस्टाग्राम पेज, फेसबुक पेज पर एक त्वरित नज़र डालें - वहाँ सुंदर परिदृश्य, नाटकीय पृष्ठभूमि के साथ किट्टी शॉट्स, स्वादिष्ट भोजन के शॉट्स, सेल्फी, समूह और क्या नहीं हैं। हम हमेशा तस्वीरों के माध्यम से अपने जीवन और क्षणों को व्यक्त कर रहे हैं।

इसीलिए हमने इस विश्व फ़ोटोग्राफ़ी दिवस 2020 को आप सभी के चित्रों के साथ मनाने का निर्णय लिया है। हम APS (अवध फ़ोटोग्राफ़ी सोसाइटी लखनऊ) में फ़ेडरेशन ऑफ़ इंडियन फ़ोटोग्राफ़ी के साथ पंजीकृत क्लब दो श्रेणियों में एक प्रतियोगिता खोल रहे हैं। ओपन कलर और ओपन मोनोक्रोम। आप प्रकृति, वन्य जीवन, यात्रा और अन्य जैसे किसी भी विषय को समिट कर सकते हैं। इसके अलावा, अपनी तस्वीरों के साथ आगे आएं और अन्य सभी को वर्ल्ड फोटोग्राफी 2020 के इस उत्सव का हिस्सा बनने के लिए प्रेरित करें। आइए एक फोटोग्राफर होने का गौरव प्राप्त करें और दूसरों को प्रेरित करें, एक हों।

नियमों और तिथियों के लिए इस प्रतियोगिता पर अधिक घोषणाओं के लिए इस स्थान को देखते रहें। इस बीच, शटर चालू रखें। प्रस्तुत प्रविष्टियों की अंतिम तिथि 30 जुलाई है।

● छवि का आकार 1024/768 72 DPI ● कोई प्रवेश शुल्क नहीं। ● उत्तर प्रदेश 2020 के फोटोग्राफर के लिए चयनित होने के लिए सर्वश्रेष्ठ प्रविष्टि। ● प्रति व्यक्ति केवल 4 छवि। ● फोटोग्राफ्स का चयन वेल रेपुटेड जज द्वारा किया जाएगा। ● प्लीज एड केवल डीएसएलआर कैमरा की पिक्चर ही स्वीकृत होंगी।

फोटो ईमेल करें : apa.19august@gmail.com

आप हमारे FB APS समूह पर चित्र भी अपलोड कर सकते हैं। #POYUTTARPRADESH2020। ट्रैवल, फोटो जर्नलिज्म, प्रकृति और वन्य जीवन में कोई हेरफेर नहीं करें। छवि के ऊपर कोई वॉटर मार्क और नाम नहीं होना चाहिए। यदि आवश्यक होगी, तो हम आपसे जेपीईजी फॉर्म में ओरिजनल अन एडिटेड तस्वीर मांग सकते हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय खबरें

NiSi ऑप्टिक्स का नया 150एमएम एक्स्प्लोरर कलेक्शन एनडी फिल्टर अन्य फिल्टरों के मुकाबले दुगने स्थायित्व का दावा करता है

150एमएम फिल्टर्स बने हैं बी270 टैम्पर्ड ग्लास से, 2एमएम की मोटाई के साथ इन्हें अन्य ग्लास फिल्टर्स के मुकाबले अधिक टिकाऊ बनाने के लिए इस्तेमाल होती है स्पेशल ग्लास हार्डनिंग प्रक्रिया।

एप्पल पेटेंट दिखाता है कि कैसे आप एक दिन 'सिंथेटिक ग्रुप सेल्फी' कैप्चर करने में सक्षम होंगे

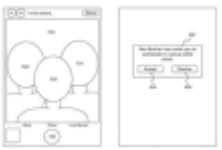

यह दिखाता है कि कैसे एक स्पेशल फोटो जो कि कैमरा एप से बनाई गई है लोगों को परिवार व मित्रों के साथ कम्पोजिट सेल्फी लेने में सहायक होगा।

फोटोस्टैटिका मैकओएस एप है आपकी तस्वीरों का ईएक्सआइएफ डेटा को विजुअलाइज करने के लिए

मैक ओएस एप ईएक्सआइएफ डेटा के माध्यम में आपकी तस्वीरों में घुलकर नतीजों को बार, पाई चार्ट इत्यादि 20 से अधिक वैरिएबल में विजुअली ब्रेकडाउन करेगा।

प्रोग्रेड डिजिटल का नया सीएफ एक्सप्रेस टाइप बी कार्ड देता है 1700 एमबी प्रति सेकेंड की रीड स्पीड

नया कोबाल्ट लेबल कार्ड देते हैं 1700एमबी प्रति सेकेंड व 1400 एमबी प्रति सेकेंड की रीड व राइट रफ्तार। गोल्ड लेबल कार्ड राइट की स्पीड कम है।

स्ट्रीमिंग के लिए ल्यूमिक्स टेथर कुछ ल्यूमिक्स उपयोगकर्ताओं को अपना कैमरा बतौर वेबकैम इस्तेमाल करने की सहूलियत देता है

अपडेट टेथरिंग सॉफ्टवेयर देता है साफ लाइव व्यू पैनल जो कि ब्रॉडकास्टिंग के लिए कैप्चर किया जा सकता है, अपने टॉप ल्यूमिक्स उपयोगकर्ताओं को सहूलियत देता है कि वे सोशल मीडिया को स्ट्रीम व अपने ही कैमरे से वीडियो मीटिंग भी ले सकें।

डेलकिन डिवाइस का नया 2टीबी सीएफएक्सप्रेस टाइप बी कार्ड, रीड स्पीड 1730 एमबी प्रति सेकेंड के साथ

डेलकिन डिवाइस को कोई नहीं हरा सकता। यह नया 2टीबी सीएफएक्सप्रेस टाइप बी कार्ड दुनिया में सबसे तेज क्षमता का सीएफएक्सप्रेस टाइप बी कार्ड होगा।

फूजीफिल्म ने रिलीज किया माइनर फर्मवेयर अपडेट अपने सात एक्ससी, एक्सएफ लेंस के लिए

सात अपडेट के चेंजलॉग में एकमात्र जानकारी दी गई है जो कि है 'छोटे बग को ठीक करना'। फिर भी, फर्मवेयर पर अपडेट रखना ठीक है।

रिकोह ने लॉन्च किया स्ट्रीट एडिशन वर्जन अपने जीआर III नए पेंट व कस्टम एसेसरी के साथ

जीआर III स्ट्रीट एडिशन किट आती है स्पेशल पेंट जॉब, चमड़े के पट्टे व मैचिंग डीटैचेबल व्यूफाइंडर के साथ।

टैमरॉन ने एलान किया वर्सेटाइल 28-200 एमएम एफ 2.8-5.6 जूम लेंस ई-माउंट के लिए

टैमरॉन लाया है 28-200 एमएम एफ2.8-5.6 डीआइ III आरडीएक्स जूम लेंस फुल-फ्रेम सोनी मिररलेस बॉडी के लिए। यह कम्पैक्ट लेंस मात्र 11.7सेंटिमीटर लंबा है व वजन है 576 ग्राम। इसमें 18 एलिमेंट है जिसमें ग्लास मोल्डेड एस्फेरिकल, हाइब्रिड एस्फेरिकल, एक्स्ट्रा लो डिस्पर्शन व लो डिस्पर्शन एलिमेंट्स हैं।

फ्लैशप्वाइंट ने एलान किया वायरलेस एक्सप्लोर पॉवर 1200 प्रो आर2 फ्लैश, यह है सबसे शक्तिशाली फ्लैश

फ्लैशप्वाइंट जो कि फ्लैश उत्पादकों के लिए अडोरमा का हाउज ब्रैंड है न अपने एक्सप्लोर पॉवर 1200 प्रो आर2 फ्लैश का एलान किया है। वायरलेस फ्लैश कंपनी का सबसे शक्तिशाली फ्लैश है।

अडोब फोटोशॉप कैमरा एप एंड्रयायड व आइओएस के लिए रिलीज, देगा एआइ पॉवर्ड लेंस

अडोब ने फोटोशॉप कैमरा रिलीज किया है, एक नई एप एंड्रयायड व आइओएस के लिए जो कि अडोब की सेंसेई एआइ ताकि इमेज ऑटोमैटिकली एडजस्ट हो जाएं, व तस्वीर खींचते वक्त या फिर इमेज लाइब्रेरी में इमेज एडजस्ट करते वक्त इमेज में फिल्टर जैसा लेंस अप्लाए हो जाए।

एप्पल ने अधिक शक्तिशाली जीपीयू ऑप्शन को अपने 16" मैकबुक प्रो से जोड़ा, व नए एसएसडी विकल्प को मैक प्रो टावर से

मैक उपयोगकर्ताओं के लिए नए अपग्रेड उपलब्ध हैं जो कि देते हैं तेज 16इंच मैकबुक प्रो व एसएसडी चेंजिंग किट टावर यूजर्स के लिए।

सिग्मा ने एलान किया 100-400 एमएम एफ5-6.3 ईमाउंट, एलमाउंट, टेलीकन्वर्टर व अन्य के लिए

सिग्मा ने एलान किया अपने आनेवाली रिलीज का 100-400 एमएम एफ5-6.3 अल्ट्रा जूम सोनी ई माउंट व एलमाउंट कैमरा के लिए, साथ ही एक जोड़ा एल माउंट टेलीकन्वर्टर का, दो यूएसबी डॉक व तीन वर्तमान प्राइम लेंस एल माउंट में आ रहे हैं।

लाओवा अल्ट्रा वाइड लेंस का सिने वर्जन तीन सेंसर फॉर्मेट के लिए रिलीज

वीनस ऑप्टिक्स ने अपने तीन अल्ट्रा वाइड लेंस के लिए सिने वर्जन का एलान किया है, एमएफटी, एपीएस सी व फुल फ्रेम यूजर्स को लगभग 110 डिग्री एंगल का व्यू देने के लिए।

हाई रिज्यॉल्यूशन कैमरा के साथ कैनन अंतरिक्ष में सैटेलाइट भेजेगा

कैनन अपने हाई रिज्यॉल्यूशन सीई एसएटी आइबी सैटेलाइट कैमरा अंतरिक्ष में भेजेगा। यह रॉकेट लैब के अगले पेलोड लॉन्च का हिस्सा होगा जिससे भारत की इमेजिंग संभावनाएं दिखेंगी। निजी एरोस्पेस कंपनी, जो कि कैलिफोर्निया में है, भरोसेमंद लॉन्च करना चाहती है। यह अपने आने वाले 'पिक्स ऑर इट डिडेन्ट हैपन' को रोक कर कुछ प्रयोग करेगी। यह इसके 'डोंट स्टॉप मी नाओ' मिशन के मात्र तीन हफ्ते के बाद ही है।

पैनासॉनिक ने एलान किया व्लॉगिंग फ्रेंडली ल्यूमिक्स डीसी-जी100/जी110 का

पैनासॉनिक ने एलान किया ल्यूमिक्स डीसी जी100 (कुछ क्षेत्रों में जी110), एक कम्पैक्ट माइक्रो फोर थर्ड कैमरा जो कि व्लॉगर के ऊपर टारगेट है। डायरेक्शनल माइक्रोफोन, फुली आर्टिक्यूलेटिंग एलसीडी व वीडियो कैप्चर के लिए ब्राइट लाल बटन के साथ जी100 उन लोगों के लिए परफेक्ट है जो खुद को फ्रेम में देखना चाहते हैं।

सिग्मा एफपी को मिला 4K रॉ आउटपुट

सिग्मा का एफपी फुल फ्रेम मिररलेस कैमरा अब उपलब्ध है 4के रॉ स्ट्रीम के आउटपुट के लिए जो कि एटोमॉस वी द्वारा बतौर प्रोरेस रॉ कैप्चर किए जा सकेंगे, व मुख्य अपडेट के भाग के तौर पर ब्लैकमैजिक वीडियो एसिस्ट पर ब्लैकमैजिक रॉ 12जी।

एक दशक में सूर्यः नासा ने सूर्य की 425 मिलियन फोटो कैप्चर कर टाइम लैप्स बनाया

नासा का सोलर डायनाम्क्सि ऑब्जर्वेट्री (एसडीओ) सूर्य की तस्वीर हर 0.75 सेकेंड पर खींचता है। अंतरिक्ष में अपने पहले दशक में एसडीओ ने 425 मिलियन से भी अधिक सूर्य की तस्वीरें ली हैं। नासा ने इन्हें मिलाकर एक उम्दा टाइमलैप्स बनाया है।

स्टूडियो न्यूज

वर्ष : 3 अंक : 12 | लखनऊ, शनिवार, 6 जून 2020 से 5 जुलाई 2020 | पृष्ठ : 16 | मूल्य : 10 रूपये

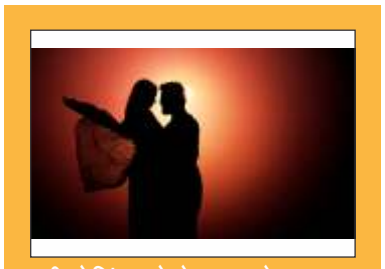

प्री वेडिंग फोटोशूट - पेज 4-5

महान विभूतियाँ - पेज 6-7

ट्रैवल फोटोग्राफी - पेज 8-9

लाइट मीटरिंग - पेज 10-11

चाइल्ड फोटोग्राफी - पेज 16

FUJIFILM X-T4

उत्कृष्ट इमेजिंग टूल के साथ हाइब्रिड कैमरा

फूजीफिल्म X-T4 कंपनी का आधुनिक हाई एंड फोटो और वीडियो APS-C मिररलेस कैमरा है। यह इन बॉडी स्टैबलाइजेशन लाता है, तेज शूटिंग, बेहतर ऑटोफोकस व एक्स-टी3 के लिए बड़ी बैट्री।

फूजीफिल्म का कहना है कि X-T4 एक्स टी 3 जैसा मॉडल है, लेकिन उसकी जगह नहीं लेता। यह 26एमपी कैमरा है और 60पी तक 20 एफपीएस व 4K कैप्चर करने के सक्षम है।

मोशन में फोटोग्राफी : कोई आसान काम नहीं है ऐसा कैमरा बनाना जो कि दोनों फोटोग्राफी व वीडियोग्राफी के लिए सटीक हो। X-T4 आज की तारीख तक सबसे शक्तिशाली एक्स सरीज कैमरा है जिसमें स्टिल व वीडियो के लिए कोई कोताही नहीं बरती गई है। चौथी जेरनेशन एक्स ट्रांस सीएमओएस 4 सेंसर, एक्स प्रोसेसर 4, नया विकसित कम्पैक्ट इन बॉडी इमेज स्टैबलाइजेशन सिस्टम, नया फिल्म सिम्यूलेशन मोड 'ETERNA ब्लीच बाइपास' व अन्य फीचर्स जो कि फीडबैक के बाद ठीक किए गए हैं, इनके साथ यह कैमरा देता है इमेज क्वालिटी जो प्रोफेशनल फोटोग्राफर्स व वीडियोग्राफर्स को संतुष्ट करे।

रंग : 85 वर्ष से भी ज्यादा के लिए फूजीफिल्म ने लगातार बदलाव के साथ खुद को ढाला है और एनालॉग से डिजिटल की ओर बढ़ा है। हमने लगातार यह देखा है कि कैसे रंगों को दोबारा बनाएं और रचनात्मकता को प्रदर्शित करने के नए तरीके विकसित करें। एक्स टी-टी4 के पास है फिल्म सिम्यूलेशन मोड, 'ETERNA ब्लीच बाइपास', जो फिल्म व स्टिल दोनों को ही आर्टिस्टिक लुक देते हैं व इमेज में कम सैचुरेशन व बढ़ा हुआ कंट्रास्ट।

फिल्म सिम्युलेशन : फिल्म सिम्युलेशन मोड फूजीफिल्म डिजिटल कैमरा के लिए नए और खास हैं और आपको देते हैं कई रंगों की गैलरी। X-T4 में है 'ETERNA ब्लीच बाइपास'। इस खूबसूरत फिल्म सिम्यूलेशन मोड से आता है हाई कंट्रास्ट लुक, यह कम रंग सैचुरेशन के साथ एनालॉग फिल्म के दिनों में इमेज मेकर्स द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली ब्लीच बाइपास तकनीक को रीप्रोड्यूज करता है।

टोन एडजस्टमेंट : जैसा आपने सीन देखा था बिलकुल वैसा ही सीन बनाने के लिए हाईलाइट व परछाई को थोड़ा बदला जा सकता है। इसकी वजह से पोस्ट प्रोसेसिंग की आवश्यकता नहीं पड़ती और आप कम्प्यूटर पर समय बिताने से अधिक रचना पर ध्यान देते हैं।

प्रदर्शन

एक प्रोफेशनल कैमरा : प्रोफेशनल कैमरा तुरंत हर लम्हे को शूट कर रिकॉर्ड करने की क्षमता रखता है। X-T4 ऑटोफोकस 0.02 सेकेंड की स्पीड, साथ में मैकेनिकल शटर का इस्तेमाल करते हुए 15 फ्रेम प्रति सेकेंड तक बर्स्ट शूटिंग मोड पर काम करता है, और अल्ट्रा फास्ट प्रदर्शन व फंक्शन देता है। इससे मिलता है हर सेकेंड मनमुताबिक कैप्चर और सबसे अच्छी क्वालिटी।

कम रोशनी एएफ : X-T4 का ऑटोफोकस अंधेरे में भी तेज व सटीक है। एडवासं फेज डिटेक्शन सिस्टम से मिलता है स्पीड व सटीक रहता है -6ईवी पर।

स्थायित्व : X-T4 में है फिक्स एक्सिस 6.5 स्टॉप इन बॉडी स्टैबलाइजेशन मैकेनिज्म और नया बड़ी क्षमता वाली बैट्री जिससे कई घंटों तक शूटिंग संभव है। मौसम, धूल व नमी से बचाव करने वाली बॉडी में यह सभी फीचर्स हैं, यह बॉडी 10 डिग्री सेलसियस में भी काम करती है। इसकी एरगोनॉमिक ग्रिप से आप बड़े टेलीफोटो लेंस का भी प्रयोग करते हुए पकड़ सही रख सकते हैं।

वीडियो

उम्दा प्रदर्शन बिना शर्त : X-T4 का विकास केवल स्टिल फोटोग्राफी तक नहीं सीमित है। फुल एचडी 240पी तेज स्पीड रिकॉर्डिंग जो कि अधिकतम 10× स्लो मोशन इफेक्ट देती है, इसके अलावा X-T4 में है डिजिटल इमेज स्टैबलाइजर और आइएस यानी इमेज स्टैबिलाइजेशन बूस्ट मोड। इन दोनों इमेज स्टैबलाइजेशन मोड को इन बॉडी इमेज स्टैबलाइजेशन के साथ मिलाने से X-T4 के साथ आप एक नए स्तर का स्टैबलाइज

वीडियो शूटिंग का अनुभव करेंगे, वह भी बिना गिंबल या थर्ड पार्टी एसेसरीज का प्रयोग किए बिना।

फिल्म मोड : X-T4 का हर आयाम बना है हाइब्रिड फोटोग्राफर के लिए, इसके स्टिल व मूवी लिवर देते है बिना किसी दिक्कत फोटोग्राफी व वीडियोग्राफी के बीच ट्रांसिशन। बिना समस्या मूवी बनाने के लिए, यह वीडियो स्पेसिफिक मेन्यू से व वीडियो ओनली क्विक मेन्यू से और संवारा गया है।

मूवी ऑप्टिमाइज्ड कंट्रोल : आरामदायक फुटेज पाने के लिए बाहरी कंट्रोल और बदली सेटिंग को रिकॉर्ड करते वक्त एलसीडी टचस्क्रीन व फ्रंट रियर कमांड डायल का इस्तेमाल करते हुए ओवरराइड करना संभव है। यह ग्रिप एडजस्ट करते वक्त वाइब्रेशन हटाने में मदद करता है।

प्रोफेशनल लेवल वीडियो रिकॉर्डिंग : X-T4 के साथ प्रोफेशनल क्वालिटी 4K/60पी 10 बिट वीडियो 4:2:0 अंदरूनी रंग व 4:2:2 बिल्ट इन HDMI पोर्ट के माध्यम रिकॉर्ड करना संभव है। अंदरूनी 200एमबीपीएस के साथ कैमरा सपोर्ट करता है एच. 264/एमपीईजी-4 एवीसी व साथ ही एच. 265/एचईवीसी, ताकि अधिक कम्प्रेशन रेट मिल सके। आप स्टैंडर्ड MOV वीडियो फाइल फॉर्मेट के साथ MP4 चुन सकते हैं।

अधिक स्टैबलाइज : वीडियो बनाते समय, हैंडहेल्ड क्रिएट करने की स्वतंत्रता के लिए यह संभव है कि IBIS के साथ डिजिटल इमेज स्टैबलाइजेशन का प्रयोग किया जाए। यह भी संभव है कि यदि हैंडहेल्ड स्थितियों में कंट्रोल चाहिए तो DIS के साथ या उसके बिना इमेज स्टैबलाइजेशन एक्टिवेट की जाए।

प्री वेडिंग शूट में सिल्हूट (छाया चित्र) का प्रयोग

गणेश शर्मा
मेंटर एवं वेडिंग फोटोग्राफर

सर मेरे इस प्री वेडिंग शूट में मैं आपसे एक ऐसी रोमांटिक तस्वीर की उम्मीद करता हूँ जिसमे कि लव मैरिज वाली फील आ जाय, जबकि हमारी अरेंज मैरिज हो रही है पर मुझे आपसे ऐसी एक फोटो चाहिए ही जिसमे हम दोनों प्रेमी-प्रेमिका लगें, आपकी यही क्रिएटिविटी हमें आपकी याद दिलाती रहेगी। जैसे ही हम सभी गंगा पार कर के नाव से उतरे तो भावी दूल्हे ने मुझसे एकांत में यह आग्रह किया, फिर मैंने कहा, अच्छा ठीक है मैं प्रयास करूँगा, पर तुरंत ही भावी दूल्हे ने कहा कि सर प्रयास नहीं करना है बल्कि आपको एक क्रिएटिव फोटो हमारे लिए करना ही होगा, यह मेरा विशेष आग्रह है, और एक विशेष ध्यान यह भी रखना है कि यह फोटो मर्यादित भी होना चाहिए, जो सबके सामने सहज रूप से शूट हो सके और, हम शूट के पश्चात फोटो को विवाह में सभी के लिए डिस्प्ले भी कर सकें।

मेरे लिए एक कठिन समस्या यह भी थी कि जिस प्री-वेडिंग शूट में भावी दुल्हन के साथ उसके माता-पिता एवं भाई भी साथ में ही आए हों, वहाँ निकटता वाले रोमांटिक फोटोशूट करना संभव नहीं होता है, क्योंकि अन्य लोगों के साथ युगल सहज होकर शूट नहीं करा पाते हैं, फोटोशूट हेतु थोड़ा एकांत आवश्यक भी होता है, परन्तु इस सार्वजनिक स्थान पर परिवार एवं मित्रों के साथ आए प्री-वेडिंग शूट में इस फरमाइशी फोटो की मांग मुझे परेशान कर रही थी, इस विशेष फरमाइशी फोटो वाली समस्या के समाधान हेतु गूगल करने के लिए भी उस समय मुझे सही शब्द या वाक्य भी नहीं सूझ रहे थे, संभवतः गूगल के पास अब भी इसका कोई समाधान न मिले, और उस समय फ़ोन पर समाधान देने वाला कोई वरिष्ठ भी नहीं था, कुछ आसान बहाने तो थे जैसे इतनी भीड़-भाड़ वाली जगह पर यह संभव नहीं है, या मैं फोटोग्राफर हूँ कोई जादूगर नहीं इत्यादि, पर बहाने बनाने वाले को प्रतिष्ठा नहीं मिलती है, और जब आप अपने कार्य को समर्पण के साथ पूरे तन-मन और आत्मा से डूब कर करते हैं तो कुछ भी कठिन नहीं होता हैं, और रास्ते भी निकल आते हैं, मेरा शूट भी चल रहा था और फरमाइशी फोटो के समाधान पर विचार भी, इसी दौरन मैंने उन्हें एक विशेष प्रकार की फोटो हेतु तैयार होने के लिए कहा।

चित्र 1 का जूम किया हुआ चित्र

अमूमन कोइ भी फोटोग्राफर जब प्री-वेडिंग शूट पर जाता है तो सन्दर्भ हेतु कुछ अच्छे पोज़ गूगल एवं अन्य वेबसाइट से छाँटकर मोबाइल में अलग रख लेता है और जिन्हें दिखा कर आसानी से विभिन्न प्रकार के पोज़ बनवा कर अपना शूट पूरा करता है, परन्तु कुछ विशेष क्लाईंट जो आपको पैसे देकर शूट कराते हैं वह मोबाइल वाली सन्दर्भ फोटो के अतिरिक्त आपसे कुछ क्रिएटिव फोटोशूट की उम्मीद भी अवश्य करते हैं, इसे आप अपनी परीक्षा भी समझ सकते हैं, और अगर आप इन क्लाईंट के आशा पर खरे नहीं उतरते तो आप की छवि केवल चित्रों की नक़ल करने वाले छायाकार वाली बनती है, बजाय एक क्रिएटिव फोटोग्राफर वाली छवि के स्थान पर।

मैंने जिस विशेष फोटो की कल्पना की थी, उसके बारे में क्लाईंट को बताया कि हम उसी समय चांदनी रात के इफ़ेक्ट वाली फोटो शूट करने जा रहे हैं, जबकि उस समय सुबह के 10 ही बज रहे थे, मेरे इस प्रस्ताव से भावी दूल्हे के 2 दोस्त जो शूट में सहयोग हेतु साथ ही साथ आये थे सहित भावी दुल्हन एवं उनके परिवार के लोग आश्चर्यचकित से हो गए, फिर आश्चर्य से यह पूछा गया कि क्या यह अभी दिन की रोशनी में भी संभव हो सकता है ? मैंने हाँ में जवाब दिया, दरअसल मैंने सिल्हूट जैसा फोटो करने का मन बनाया था, जिसमें यह संभव हो सकता था, अक्सर मैं विभिन्न कार्यशालाओं में यह कहता भी रहता हूँ कि एक अच्छी तस्वीर दिमाग में पहले आती है और कैमरे की स्क्रीन पर बाद में, क्योंकि किसी अच्छे फोटो हेतु आपको पहले उसकी कल्पना करनी होती है और फिर कैमरे को एक टूल के रूप में प्रयोग करके इसे साधना होता है, साथ ही साथ आपकी कैमरे एवं लाइट के साथ अच्छी मित्रता भी आवश्यक होती है, मैंने प्रेम के स्थान पर मित्रता शब्द का प्रयोग सोच समझ कर किया है, क्योंकि प्रेम तो इन्हे बैग में बंद रखे हुए भी किया जा सकता है, और मित्रता में आपको इनसे गहराई से परिचय बढ़ाना होगा, अगर हम इनसे मित्रता करते हैं और थोड़ी प्रैक्टिस भी, तो बदले में हमें अच्छे परिणाम प्राप्त होते हैं।

मैंने प्री-वेडिंग सहित विभिन्न अवसरों पर सिल्हूट फोटोग्राफी का प्रयोग किया है, और क्लाइंट से प्रसंशा भी प्राप्त की है, उनमे से कुछ के अनुभव उनकी कहानी के साथ आपको इस लेख में साझा करूंगा, और सिल्हूट से अपरिचित फोटोग्राफर भाईयों को हम इसका पूरा परिचय भी इस लेख में देंगे, पर पहले हम यह जान ले कि सिल्हूट क्या होता है, यह कैसे बनता है? अपने व्यवसाय में हम सिल्हूट प्रयोग कब और कैसे कर सकते हैं।

सिल्हूट जिसे सिल्वीट भी कहते हैं, अगर सरल भाषा में कहें तो यह एक ऐसा चित्र होता है जिसमे मुख्य सब्जेक्ट आकृति के रूप में दिखता है और मुख्य सब्जेक्ट जो काला या लगभग काला जैसा दिखता है, जिसे हम विपरीत प्रकाश में विशेष कैमरा सेटिंग पर फोटोशूट करके छाया-आकृति बनाना भी कह सकते हैं, अब हम यह समझेंगे कि यह बनता कैसे है? तो जहाँ सामान्य फोटोशूट में हम अपने सब्जेक्ट पर फ्लैश अथवा किसी अन्य माध्यम से प्रकाश डालते है या रौशनी में शूट करके बैलेंस एक्सपोज़र प्राप्त करते हैं, जिससे हमारी तस्वीर स्पष्ट दिखाई पड़ती है, परन्तु सिल्हूट फोटोग्राफी में बैकग्राउंड ज्यादा प्रकाशित एवं सब्जेक्ट लगभग काली आकृति जैसा प्रतीत होता है, हम विषय वस्तु को उसके आउटलाइन के माधयम से महसूस करते हैं, ऐसी फोटोग्राफी हेतु कैमरे एवं लाईट की सेटिंग इस प्रकार करनी होती है कि जिससे हमारा मुख्य सब्जेक्ट अंडर एक्सपोज़ हो एवं बैकग्राउण्ड के ब्राइटनेस को रूचिकर रूप में एक्सपोज़ किया जाता है, जिससे बैकग्राउण्ड रंगीन अथवा सफ़ेद दिखाई पड़ता है।

अब मेरे अनुभव के अनुसार सिल्हूट फोटोग्राफी के लाभ समझने की कोशिश करते हैं।

सिल्हूट छवियां रंगीन चित्रों के मुकाबले हमेशा मजबूत, नाटकीय और शक्तिशाली दिखती हैं, जब भी कोई दर्शक सिल्हूट प्रभाव वाले चित्र को एल्बम में अथवा स्क्रीन पर देखता है तो वह चित्र के आश्चर्यजनक सादगी में कुछ क्षणों के लिए डूब सा जाता है, हर सिल्हूट चित्र अपनी अलग कहानी कहती है, इन चित्रों में भले ही सब कुछ स्पष्ट न दिखता हो परन्तु दर्शक को यह चित्र कुछ क्षणों के लिए कल्पनालोक में विचरण करने को विवश कर देती है, एक साधारण विषय वस्तु को हम इस शूट के माध्यम से विशेष बना सकते हैं।

अब बात को वापस घाट वाली जगह से शुरू करते हैं, जो चित्र (1) को बरबस देखने पर एक चांदनी रात में प्रेमी अपनी प्रेमिका के मस्तक को चूमता हुआ दिखाई पड़ रहा है, परन्तु बहुत ध्यान से जूम करके देखने पर प्रेमी युगल के मुँह एक दूसरे से कुछ दुरी पर दिखाई देते हैं, यह लगभग वैसा ही है जैसे कोइ पर्यटक ताजमहल के अथवा किसी ऊँची ईमारत के शीर्ष को दूर से आभासी रूप में पकड़ के फोटो खिंचवाता है जबकि पर्यटक और इमारत वास्तव में दूर-दूर होते हैं पर चित्र में निकट, इसे आप इनसेट में भी महसूस कर सकते हैं।

1/2500 sec. f4 90mm

1/4000 sec. f4 24mm

चित्र 1

1/8000 sec. f5 35mm

चित्र 2

चित्र (2) पोस्ट-वेडिंग का है जो क्लाइंट अपने एनिवर्सरी के पूर्व शूट करवा रहा है, शूट के दौरान विवाहित जोड़े को सिंदूरदान के साथ अपनी एक फोटो चाहिए थी, मेरे यह प्रश्न पूछने पर कि सिंदूरदान के साथ आपकी फोटो विवाह में तो शूट भी हुई होगी ही, पोस्ट वेडिंग में सिंदूरदान के साथ फोटो कुछ अटपटा सा भी लगेगा परन्तु उनके विशेष आग्रह पर मैंने सिल्हूट फोटो करने का मन बनाया क्योंकि मैं यह समझ सकता था कि संभवतः वह अपनी विवाह वाली रंगीन फोटो से संतुष्ट नहीं होंगी और उन्हें एक यादगार फोटो की चाहत होगी, पर बिना दुल्हन वाले पर्याप्त श्रृंगार के अगर मैंने कोइ रंगीन फोटो अभी खींची भी तो यह उनके विवाह वाली फोटो से भी कम अच्छी हो सकती है, उपरोक्त चित्र में छोटा सा सिंदूरदान मुस्कुराती हुई दुल्हन के हाथ में है और पीछे वाराणसी के घाट वाले सजावटी छतरी भी दिख रहें हैं, इस सिल्हूट चित्र को मैंने तुरंत कैमरे की स्क्रीन पर उन्हें दिखाया भी, वे संतुष्ट भी हुए और प्रसन्न भी।

STUDIO NEWS
लखनऊ, सोमवार, 6 जुलाई 2020 से 5 अगस्त 2020

इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप मोरोक्को के राजा की तस्वीर ले रहे हैं या मारकेश के किसी बाजार में एक मजदूर की। एक फोटोग्राफर को हर हाल में हर किसी से प्रेम से पेश आना चाहिए। - अल्बर्ट वाटसन

1/8000 sec. f4 24 mm

1/5000 sec. f6.3 90mm

1/160 sec. f2 50mm

1/50 sec. f3.5 90mm

दरअसल सिल्हूट चित्र सामान्य फोटोग्राफर नहीं करते हैं और मोबाइल से भी बहुत काम खींची जाती है इसलिए यह विशेष भी लगती है और आकर्षित भी, चित्र (03) की कहानी भी चित्र (2) जैसी ही है जिसमें सगाई के बाद और विवाह पूर्व प्री-वेडिंग शूट में कपल की अंगूठी पहनाने वाली फोटो का आग्रह हुआ, और यहाँ मैंने सूरज को रिंग का नगीना के रूप में अंगूठी पर हीरे जैसा स्थापित करने का प्रयास किया है, चित्र (4) में कपल का ड्रेस मुझे अनाकर्षक लग रहा था और रंगीन फोटो से मुझे संतुष्टि नहीं प्राप्त हो रही थी, तो वहाँ भावी दुल्हन का दुपट्टा उड़ाकर सिल्हूट के प्रयोग से यह फोटो अत्यंत आकर्षक बन गयी, चित्र (5) की कहानी बिलकुल ही भिन्न है जिसमें कपल का प्रेम विवाह परिवार की सहमति से हो रहा था, परन्तु प्रेमी जोड़े को केवल साधारण फोटोशूट कराना था जबकि उनकी कहानी जानने के बाद मैं उनकी एक रोमांटिक फोटो करना चाह रहा था, जिसके लिए वह सहमत भी नहीं थे, क्योंकि उन्हें ऐसी कोई फोटो नहीं चाहिए थी जो समाज में दिखाई न जा सके, फिर मेरे इस प्रस्ताव पर कि आपकी यह रोमांटिक फोटो आपके अतिरिक्त कोई और नहीं पहचान पायेगा तो वह तैयार हो गए, मैंने बैटरी वाली एलईडी लाइट को बैक लाइट की तरह करके सिल्हूट जैसी इस फोटो का निर्माण किया इस चित्र में कपल के चेहरे पर रिम लाइट का प्रभाव भी दिख रहा है, यह फोटो शूट मैंने वाराणसी में दशाश्वमेघ घाट के उस पार रेतीले स्थान पर हुआ है, जिससे बैकग्राउण्ड में गंगा घाट की लाइटिंग और गंगा के जल में लाइट का रिफ्लेक्शन भी दिख रहा है, इस फोटो से प्रेमी कपल बहुत प्रसन्न हुए।

सिल्हूट के लिए लाईट कैसी होनी चाहिए, कैमरे की सेटिंग क्या होनी चाहिए, यह समझना आवश्यक है, इस लेख को पढ़ने वाले कुछ फोटोग्राफर भाई मेरी तरह इस विषय से अनभिज्ञ हो सकते हैं, क्योंकि जब मैंने फोटोग्राफी का कार्य शुरू किया था, तो उस समय सिल्हूट मेरे लिए एक पहेली जैसा था, न ही मैं इसका उपयोग जानता था और न ही करने का तरीका, पर अब यह मेरा मानना है कि आप सिल्हूट फोटोग्राफी किसी भी समय किसी भी लाइटिंग कंडीशन में कर सकते है, अगर आपके पास पर्याप्त एसेसीरीज उपलब्ध हो तो, जैसे 1 या अधिक High-speed sync (HSS) फ्लैश ट्रिगर के साथ, फ्लैश हेतु हल्का स्टैंड।

अब आगे यह जानेंगे कि सिल्हूट के लिए बेहतर लाइट कब और कहाँ से प्राप्त होती है, और शूट के दौरान किन बातों का ख्याल रखना होता है।

सिल्हूट हेतू सबसे बेहतर समय सुबह सूर्योदय से लेकर लगभग 1-2 घंटे बाद तक और सूर्यास्त के 1-2 घंटे पहले तक, इस समय सूर्य की लालिमा भी चित्र में बहुत सुन्दर लगती है।

(1) सिल्हूट के लिए सबसे महत्तवपूर्ण यह है कि लाइट सब्जेक्ट के ठीक पीछे से आ रही हो और सब्जेक्ट पर अपेक्षाकृत बहुत कम लाइट पड़ रही हो, प्राकृतिक रूप यह स्थिति रोज सूरज के सामने सुबह एवं शाम को आसानी से बन सकती है, परन्तु जाड़े एवं बरसात के मौसम में बादल घिरे रहने के कारण जब सूरज आकाश में दिखाई नहीं पड़ता है और सब्जेक्ट के सभी तरफ सामान लाइट पड़ती है तो इस लाइट कंडीशन में सिल्हूट नहीं बन सकता है।

(2) खिड़की या दरवाजे के पास भी विपरीत रौशनी में भी सिल्हूट फोटोग्राफी कर सकते हैं, चित्र (06) में खिड़की के सामने माँ और बच्चे का चित्र आप देख सकते हैं, प्राकृतिक प्रकाश कम होने पर एक फ़्लैश का प्रयोग भी किया गया है।

(3) असली कलाकारी सब्जेक्ट को सही स्थान पर सेट करना है, सुनिश्चित करें कि आपका सब्जेक्ट फ्रेम में किसी भी अन्य तत्वों से अलग स्थापित हो, जिससे वो किसी अन्य से मिश्रित न हो बल्कि स्पष्ट दिखाई दें, अगर आसान शब्दों बताऊँ तो मैं कपल में प्रत्येक को इस प्रकार खड़ा करता हूँ कि उनके एक तरफ के कान सूरज या प्रकाश स्त्रोत की तरफ हों और दूसरे तरफ के कान कैमरे की तरफ, अर्थात उन्हें इस प्रकार की पोजीशन में रखना है कि फोटो देखने वाले दर्शक सब्जेक्ट को उनके प्रोफाइल और फेशियल फीचर्स से पहचान सकें।

(4) सिल्हूट हेतु कैमरा सेटिंग क्या होना चाहिए, तो ऐसी कोई फिक्स सेटिंग नहीं होती है, विभिन्न प्रकार की लाईट में अलग-अलग सेटिंग का प्रयोग करना होता है, एक बेसिक सेटिंग आपको बता सकता हूँ, कैमरे को मैनुअल मोड में सेट करके ISO न्यूनतम करना है।

अपर्चर 5.6 से छोटा रखना है मतलब अपर्चर को 8 से लेकर 22 तक या उससे कम और अधिक भी कर सकते हैं, यह प्रकाश की कम या अधिक होने के स्थिति पर निर्भर करता है।

शटर स्पीड 1/250 से ऊपर रखना होता है, आप 1/500 से 1/2000 अथवा 1/8000 भी लाइट के उपलब्धता के अनुसार अपनी सेटिंग बदल सकते हैं।

इस लेख के साथ छपी कुछ तस्वीरों की तात्कालिक कैमरा सेटिग भी यहाँ साझा कर रहा हूँ-

(5) सिल्हूट में फोकस भी अत्यन्त महत्वपूर्ण तत्व है, क्योंकि बिना शार्प फोकस के सिल्हूट नरम दिखाई पड़ेगी, सब्जेक्ट पर ठीक से फोकस होने पर ही सब्जेक्ट की आउटलाइन तीखी और बैकग्राउंड से अलग दिखेगी, जरूरत के अनुसार मैन्युअल फोकस भी कर सकते हैं।

(6) पोस्ट प्रोडक्शन - डिजिटल फोटोग्राफी में पोस्ट प्रोडक्शन का बहुत महत्त्व होता है, बेहतर परिणाम के लिए आपको Jpeg के साथ Raw भी शूट करना चाहिए, जिससे मन चाहे परिणाम पाने में सहयोग मिलता है।

(7) आप व्हाइट बैलेंस के विभिन्न प्रयोगों से आकाश को नीला, गोल्डेन अथवा लाल भी बना सकते हैं या Raw शूट करके पोस्ट प्रोडक्शन में भी उपरोक्त कलर प्राप्त कर सकते हैं।

इस लेख के माध्यम से मैंने सिल्हूट फोटोग्राफी के बारे में अपने अनुभव आपसे साझा किया है, आपको यह लेख कैसा लगा? अगर आप मुझे फेसबुक पर अपने विचार साझा करेंगे तो मुझे बहुत अच्छा लगेगा, धन्यवाद।

1/8000 sec. f5 28mm

1/800 sec. f5.6 90mm

महान विभूतियाँ

गुरुपूर्णिमा पर विशेष

बेनू सेन

(1932 - 2011)

FRPS, MFIAP, ESFIAP, FNPAS, Hon. FBPS, Hon. JIPF, Hon. EFIAP

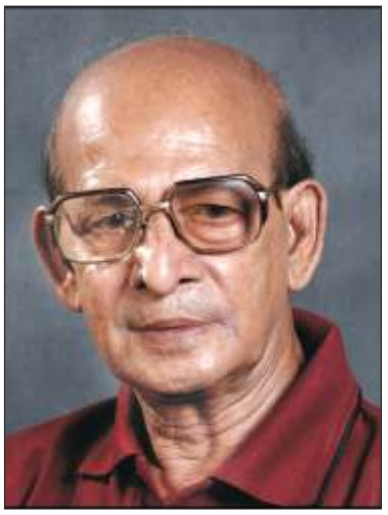

बेनू सेन की जीवनयात्रा 26 मई 1932 को मनिंदरनाथ सेनगुप्ता और परोबती सेनगुप्ता के दूसरे बेटे के रूप में शुरू हुई थी।

भारत में उनके प्रशंसक, शुभचिंतक, फोटोग्राफर और छात्र उन्हें प्यार से 'बेनू दा' कहते थे। भारतीय फोटोग्राफी में बेनू सेन को एक विलक्षण प्रतिभा वाले इंसान के रूप में याद किया जाता है। उनका शानदार कैरियर कई सम्मान और उपलब्धियों से अलंकृत है। बेनू दा 'पिक्टोरियल फोटोग्राफी' के चमकते सितारे थे।

यदि जीवन को क्षणभंगुर क्षणों का कोलाज माना जाये तो बेनू सेन ऐसी असंख्य छवि और रंगों को हमेशा के लिए अपने कैमरा में कैद कर लेने वाले जादूगर थे। बेनू सेन ने एक से एक लाजवाब फोटो क्लिक की। ऐसा लगता है जैसे रोशनी और शेड्स उनके इशारों पर नाचते थे। बेनू सेन ने फोटोग्राफी के नए आयाम स्थापित किये।

बेनू सेन कोलकाता के दमदम फोटोग्राफी एसोसिएशन के अध्यक्ष और फेडरेशन ऑफ इंडियन फोटोग्राफी के महासचिव भी थे। इंटरनेशनल पिक्टोरियल फोटोग्राफी के क्षेत्र में उनका योगदान अद्वितीय है। उन्हें पिक्टोरियल फोटोग्राफी का महारथी मना जाता है। भारतीय फोटोग्राफी के विकास में जितना योगदान उनका है उतना अन्य किसी दूसरे का नहीं।

इसे संयोग ही कहेंगे कि इंजीनियर

STUDIO NEWS
लखनऊ, सोमवार, 6 जुलाई 2020 से 5 अगस्त 2020

फोटोग्राफी दुनिया को समझने की कुंजी है। - बेरेनिस एबोट

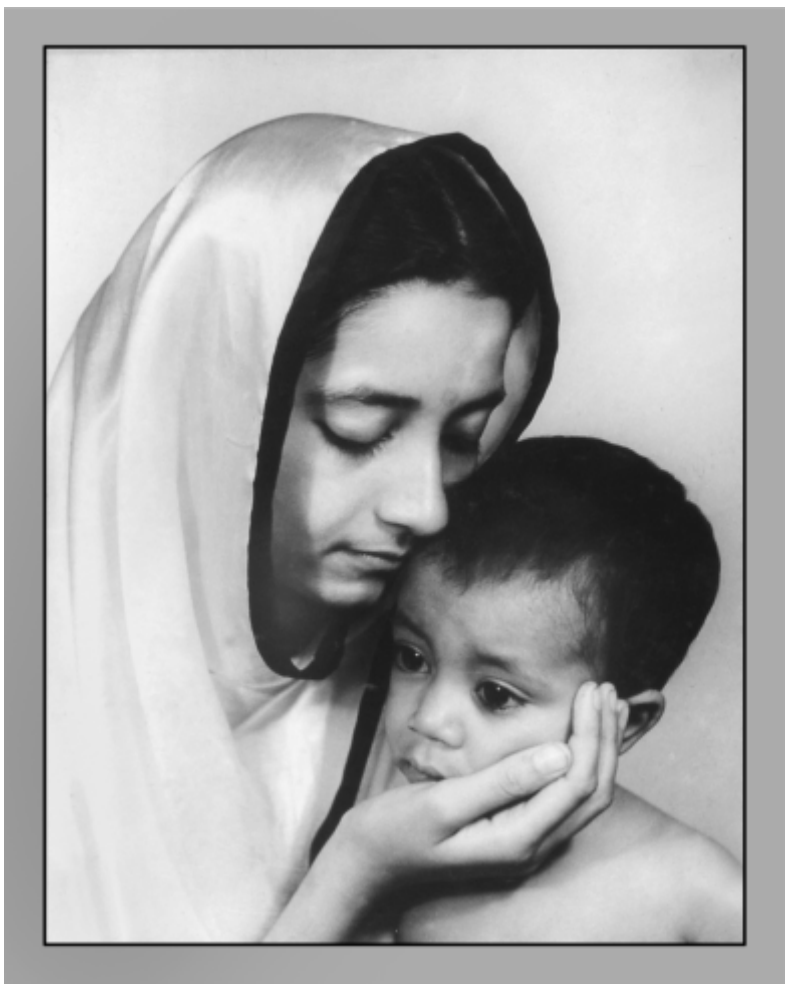

बनते बनते वो कैमरे के व्यूफाइंडर के साथ जा खड़े हुए।

वह यूनेस्को की मान्यता प्राप्त संस्था, "फेडरेशन इंटरनेशनल डी ल आर्ट फोटोग्राफिक से 'द मास्टर ऑफ फोटोग्राफी' (एमएफआईएपी) के दुर्लभ सम्मान से नवाजे जाने वाले दुनिया के तीसरे व्यक्ति थे। उन्हें 1975 में रॉयल फोटोग्राफिक सोसायटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन में फेलोशिप (एफआरपीएस) प्रदान किया गया था।

बेनू सेन 1990 में भारतीय संग्रहालय से फोटो ऑफिसर के रूप में सेवानिवृत्त हुए। सोशल एंड कल्चरल एन्थ्रोपोलॉजी और संबद्ध संग्रहालय फोटोग्राफी के क्षेत्र में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा। एक कलाकार के रूप में उन्हें पूरे विश्व में विभिन्न स्थानों पर उनकी फोटो प्रदर्शनी लगी। पिछले पचास वर्षों के दौरान विभिन्न देशों से उनकी कलात्मक फोटोग्राफी ने कई पुरस्कार प्राप्त किये। उनकी अनोखी कल्पनाशीलता के कारण उनकी 'क्लिक्स', फोटो कम एक चित्रकार की कलाकृति अधिक दिखती है। उन्हें कैमरा वर्ल्ड इंटरनेशनल, ऑस्ट्रेलिया ने सर्वश्रेष्ठ भारतीय चित्रकार के रूप में चुना था और हार्वर्ड सिनेटिक संग्रहालय, हार्वर्ड यूनिवर्सिटी ने उन्हें संग्रहालय फोटोग्राफी में उत्कृष्ट योगदान के लिए सम्मानित किया था।

रचनात्मक फोटोग्राफी के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान के लिए 2010 में भारत सरकार ने उन्हें 'लाइफ टाइम अचीवमेंट' पुरस्कार से सम्मानित किया।

जब मैं बेनु दा के साथ बिताये अपने समय को याद करता हूँ - तो विस्मरण होता है कि हम एक-दूसरे के बहुत करीब थे, मैं उनका बहुत सम्मान करता था और वह मुझसे बहुत प्रेम करते थे। मैं उन्हें अपना काम दिखाता था और उनकी सलाह और मार्गदर्शन लेता था और हर बार वह अपनी विशेष सलाह देने के लिए तैसार रहते थे। हम बेनू दा को हमेशा लखनऊ कैमरा क्लब के वार्षिक फ़ोटोग्राफ़ी ऑल इंडिया एण्ड इंटरनेशनल सैलून ऑफ़ फ़ोटोग्राफ़ी के लिए ज्यूरी सदस्य के के रूप में आमंत्रित करते थे, शायद वह एलसीसी सैलून के स्थायी जजों में से एक थे - उन्होंने हमारे अनुरोध को कभी भी अस्वीकार नहीं किया, वे कहते थे, "मैं आपको मना नहीं कर सकता, क्योंकि मैं लखनऊ को अपना दूसरा घर मानता हूँ"। लखनऊ कैमरा क्लब ने उन्हें लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से भी सम्मानित किया था।

ऐसे महान कलात्मक फोटोग्राफर की जीवन यात्रा 17 मई, 2011 को कोलकाता में समाप्त हो गयी। इसके साथ ही दुनिया ने एक महान फोटो-कलाकार, असाधारण शिक्षक, एक दूरदर्शी और एक महान इंसान खो दिया।

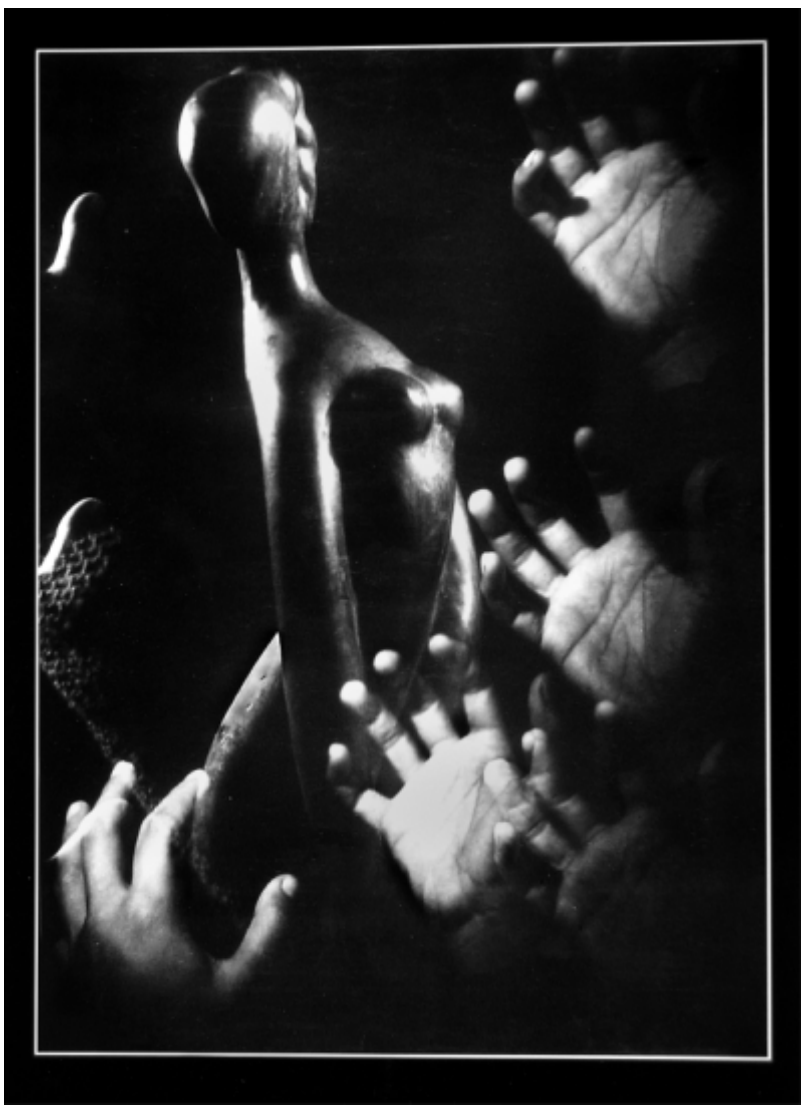

अनिल रिसाल सिंह
MFIAP (France), ARPS (Great Britain), Hon.FIP (India), Hon.LCC (India), FFIP (India), AIIPC (India), Hon.FSoF (India), Hon.FPAC (India), Hon.TPAS (India), Hon.FSAP (India), Hon.FICS (USA), Hon.PSGSPC (Cyprus), Hon.FPSNJ (America), Hon. Master-TPAS (India), Hon. Master-SAP (India), Hon.FWPAI (India), Hon.FGGC (India), Hon.GA-PSGSPC (Cyprus)
पूर्व अध्यक्ष, फेडरेशन ऑफ इण्डियन फोटोग्राफी

पर्यटकों व फोटोग्राफर्स का गंतव्य ... धनबाद

मुकेश श्रीवास्तव
FIE, FFIP, EFIAP

इंजीनियर, फोटोग्राफर, लेखक,
पूर्व निदेशक (ई), भारत सरकार
निदेशक, सेण्टर फॉर विजुअल आर्ट्स
निकॉन मेण्टर (2015-2017)
एवं अध्यक्ष, धनबाद कैमरा क्लब

Fig 1

धनबाद कोयले के लिए मशहूर है, इसे कोयला की राजधानी भी कहा जाता है। कोयले के अलावा यह प्राकृतिक खूबसूरती के लिए भी जाना जाता है। यहां खूबसूरत झील हैं, वॉटर फॉल हैं व पहाड़ भी हैं। गैंग्स ऑफ वसेपुर काफी मशहूर फिल्म है बॉलीवुड की, धनबाद में ही एक जगह है वसेपुर, उसी पर आधारित है यह फिल्म। हालांकि अब वसेपुर की हालत पहले जैसी नहीं रही, अब सब बदल गया है और यहां कोई गैंग वॉर नहीं होती।

मैथन बांधः

मैथन बांध धनबाद से करीब 48 किमी की दूरी पर बना है। झारखंड के पश्चिम बंगाल बॉर्डर पर। पूरे दक्षिण पश्चिम एशिया में यह इकलौता डैम है जिसमें में अंडरग्राउंड पावर स्टेशन है। यह अपने आप में एक अलग बात है। जिस झील पर यह बना है वह 65 स्क्वेयर किलोमीटर में फैला है। यह 1948 में दामोदर वैली कॉरपोरेशन (डीवीसी लिमिटेड) द्वारा बनाया गया था। यह डैम बाढ़ नियंत्रण और बिजली उत्पादन के लिए बनाया गया था। भारत के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू द्वारा यह स्थापित किया गया था।

मैथन डैम झील व खूबसूरत जंगलों के बीच स्थित है। आप परिवार व मित्रों के साथ यहां नाव का लुत्फ उठा सकते हैं। इसके अलावा आप हरे भरे जंगलों व झील के पास पैदल चलने का आनंद भी ले सकते हैं। यहां सूर्यास्त व सूर्योदय जैसे खूबसूरत नजारे दिखेंगे। यदि आप आध्यात्मिक व्यक्ति हैं तो आपको माता कल्याणेश्वरी मंदिर जरूर जाना चाहिए। मैथन को कश्मीर का कोयलांचल भी कहा जाता है। ऐसा इसकी खूबसूरती के कारण है व यह भारत की कोयला बेल्ट है जो कि बराकर नदी पर बसा है, साथ ही बहुत मशहूर वीकएंड व पिकनिक स्थल है।

माइ का स्थान नाम से पड़ा है मैथन, इसका अर्थ है माता का स्थान, यानि प्राचीन कल्याणेश्वरी मंदिर जो कि 16वीं शताब्दी में राजा बराकर ने बनवाया था।

जाने का उचित समयः मैथन में अप्रैल व जून सबसे गर्म माह होते हैं। यहां अधिकतम तापमान 40 डिग्री सेलसियस पार हो जाता है। ऊमस भी चरम पर होती है, इसलिए बेहतर है इन महीनों में यहां न जाएं। सबसे अच्छा वक्त है अक्टूबर से फरवरी। सर्दियां यहां अच्छी खासी पड़ती हैं और पारा पांच डिग्री तक लुढ़क जाता है। यहां का मॉनसून अच्छा होता है और जुलाई से सितंबर तक रहता है। जो भीड़भाड़ न देखना चाहें वह मॉनसून में हरी नीली झीलों का लुत्फ उठा सकते हैं। **(फिग 1 से 7 तक प्रकृतिक खूबसूरती देखें)**

तोपचांची झीलः

झारखंड के धनबाद जिले में यह एक दिलचस्प पयर्टक स्थल है। धनबाद से 30 किलोमीटर दूर यह राष्ट्रीय राजमार्ग 2 पर बना है। हालांकि झील बनावटी है, इसके आसपास जंगल व हरियाली एक खूबसूरत पिकनिक स्पॉट है। 214 एकड़ में पूरा बना है, घूमने के लिए लोगों का पसंदीदा है। नजदीक ही पारसनाथ पहाड़ है जिसके कारण पर्यटक यहां अधिक आते हैं। तोपचांची झील को मुख्यतः जलाशय की तरह इस्तेमाल किया जाता है जिससे जिले व उपनगरीय इलाकों में पानी भेजा जाता है। तोपचांची वाइल्डलाइफ सैंक्चुएरी 8.75 स्क्वायर किलोमीटर में फैला हुआ है। यह जगह छोटी है लेकिन फिर भी यहां कुछ ऐसे वन्यजीव रहते हैं जो कि हानि नहीं पहुंचाते।

झील की ओर के क्षेत्र में अध्यात्मिक लोग मुख्यतः जैन व हिंदु काफी दिखते हैं। **(फिग 8 से 12 तक देखें)**

Fig 2

Fig 3

Fig 4

Fig 5

Fig 6

Fig 7

STUDIO NEWS
लखनऊ, सोमवार, 6 जुलाई 2020 से 5 अगस्त 2020

प्रकाश फोटोग्राफी का मूल तत्व है। प्रकाश का आलिंगन कीजिये। उससे प्रेम कीजिये। प्रकाश को जानिये। प्रकाश को भली-भांति समझ जाना फोटोग्राफी को समझने की कुंजी है। - जॉर्ज ईस्टमैन

Fig 8

Fig 9

Fig 10

Fig 11

Fig 12

Fig 13

Fig 14

Fig 15

Fig 16

भटिंडा फॉल

भटिंडा फॉल धनबाद रेलवे स्टेशन से मात्र 14 किलोमीटर दूर पर स्थित है। एक बढ़िया पिकनिक स्पॉट के रूप में इसे देखा जाता है। हरियाली और दिल को सुकून देने वाली शांति है यहां।

इसमें कोई शक नहीं कि यह वॉटरफॉल अत्यंत खूबसूरत और आकर्षक है। यह जगह शांति की अनुभूति देती है। यदि आप धनबाद में अच्छे रेस्टोरेंट के साथ बढ़िया होटल चाहते हैं तो इस इलाके में आपको अच्छे विकल्प मिलेंगे।

यहां अधिकतर लोग पिकनिक मनाने के लिए आते हैं। हालांकि, यहां कई पर्यटक प्राकृतिक नज़ारों का लुत्फ उठाने के लिए कई दिनों तक ठहरते हैं। **(फिग 13 से 16 तक प्राकृतिक खूबसूरती देखें)**

फोटोग्राफी में लाइट मीटरिंग और मीटरिंग मोड्स

फोटोग्राफी में प्रकाश संशोधक (लाइट मॉडिफायर्स) की गुणवत्ता और महत्व को बता रही हैं, भारत में फोटोग्राफी में पीएच.डी. प्राप्त करने वाली पहली महिला, लिम्का बुक और इंडिया बुक रिकॉर्ड होल्डर एवं एमिटी यूनिवर्सिटी लखनऊ में असिस्टेंट प्रोफेसर

डॉ. तूलिका साहू

फोटोग्राफी में लाइट मीटरिंग से तात्पर्य उस तकनीकी से है जिससे कि कैमरा किसी फ्रेम में उपस्थित प्रकाश का विश्लेषण करके सही शटर स्पीड, अपर्चर और ISO के कॉम्बिनेशन से स्वयं ही सही एक्सपोज़र को सुनिश्चित कर लेता है, किन्तु आवश्यक नहीं प्रकाश की अलग-अलग व्यवस्थों में ये गणना सही ही साबित हो। कैमरे का लाइट मीटर तब सबसे अधिक अच्छी तरह से काम करता है जब सीन सामान रूप से प्रकाशित हो, मगर जब सीन में प्रकाश का वितरण असमान हो, अर्थात कुछ क्षेत्रों में प्रकाश बेहद तीव्र हो तथा कुछ जगहों पर प्रकाश पर्याप्त न हो, ऐसे में मीटर "मीटर फूलिंग" करने लग जाता है। कैमरा लाइट मीटर एक्सपोज़र का अनुमान लगाने में बुरी तरह असफल भी हो सकता है। उदाहरण के लिए यदि आप फ्रेम में बिना बादलों या सूरज के साथ नीले आकाश की तस्वीर ले रहे हैं, तो मीटरिंग में कोई समस्या नहीं आएगी क्योंकि आसमान में उपलब्ध प्रकाश एक ही तीव्रता का है। वहीं यदि छवि में कुछ बादल भी जुड़ जाते हैं तो रीडिंग थोड़ी कठिन हो जाती है क्योंकि तब मीटर को बादल तथा आकाश दोनों की चमक को अलग अलग रीड करके किसी एक एक्सपोज़र का निर्धारण करना होता है। अगर ऐसा न किया जाये तो या तो आकाश और बादल अंडर या ओवर एक्सपोज़ हो जायेंगे तथा फोटोग्राफ मध्यम

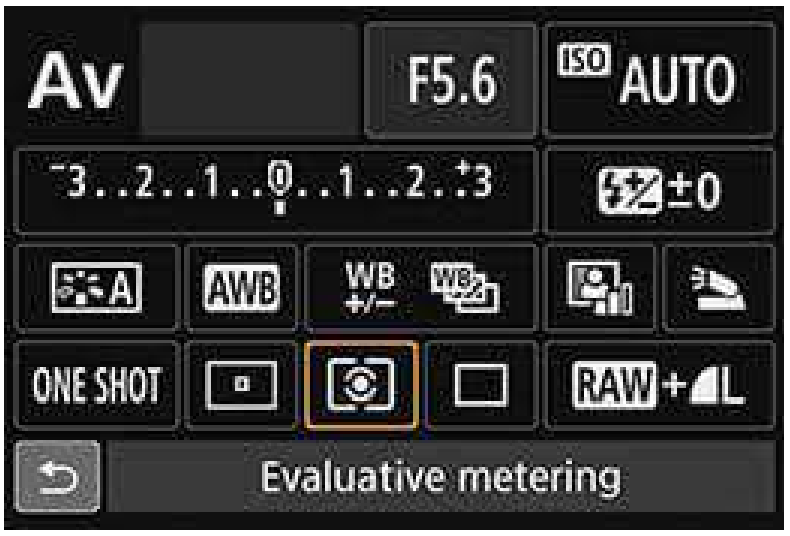

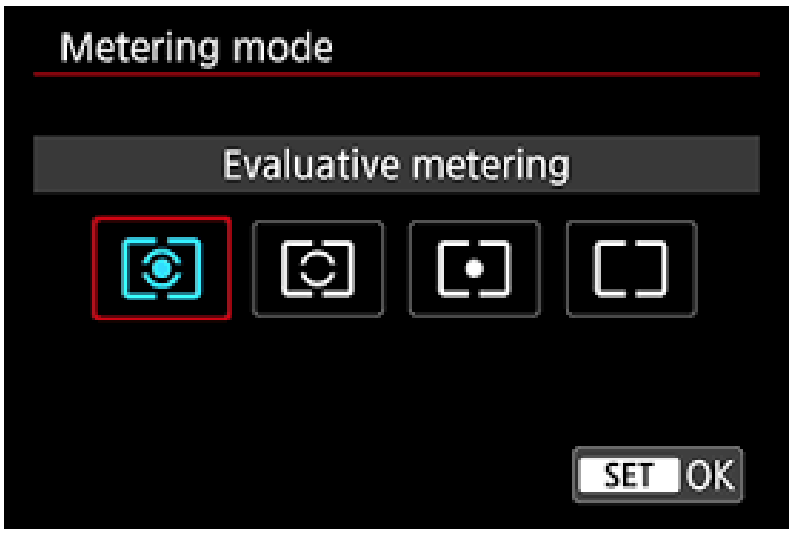

टोन्स खो बैठेगी। यदि उसी दृश्य में एक बड़ा पर्वत भी जुड़ जाये तो क्या होगा? तब कैमरा मीटर के लिए वह बड़ी वस्तु जो बादलों और आकाश के सापेक्ष गहरे रंग की है सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हो उठेगी और तब वह एक ऐसे एक्सपोज़र को तय करने की कोशिश करेगा जिसमे की पहाड़ अपने डिटेल्स के साथ ठीक से उजागर हो। ऐसे में मीटर डिफ़ॉल्ट रूप से, पूरे फ्रेम में प्रकाश के स्तर को देखेगा और छवि के उज्ज्वल और अंधेरे क्षेत्रों को संतुलित करते हुए एक एक्सपोज़र सजेस्ट करेगा। इसलिए जटिल प्रकाश परिस्थितियों में फोटोग्राफर सही एक्सपोज़र की गणना के लिए कैमरे में उपस्थित लाइट मीटर के अलग अलग मोड्स के प्रयोग से सही एक्सपोज़र ज्ञात करता है।

पुराने ज़माने के कैमरे प्रकाश "मीटर" से लैस नहीं हुआ करते थे, जो एक सेंसर के माध्यम से कैमरे में आने वाले प्रकाश की मात्रा और तीव्रता को मापता था। इसलिए प्रकाश की सही मात्रा को मापने के लिए हाथ में पकडे जा सकने वाले प्रकाश मीटर्स का प्रयोग करना पड़ता था। क्योंकि उस समय एक्सपोज़र निगेटिव्स पर होने के कारण रिजल्ट को तुरंत देख पाना असंभव था और इस प्रकार सही एक्सपोज़र का अनुमान एक तरह से जुए की तरह ही होता था तब हैंड-हेल्ड प्रकाश मीटर्स ही फोटोग्राफर्स के लिए एक सहारा थे।

आज प्रत्येक DSLR कैमरा इनबिल्ट प्रकाश मीटर के साथ आते हैं जो कैमरे तक पहुँचने वाले परावर्तित प्रकाश को माप कर सही एक्सपोज़र बताते है। हर आधुनिक डीएसएलआर में कुछ "मीटरिंग मोड्स " होते है, जिसे "कैमरा मीटरिंग", "एक्सपोज़र मीटरिंग" या बस "मीटरिंग" भी कहा जाता है। यह जानना कि मीटरिंग कैसे काम करती है और इसके प्रत्येक मोड का फोटोग्राफी में क्या महत्व है, ये एक फोटोग्राफर के लिए बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह असामान्य प्रकाश स्थितियों में भी बेहतर तस्वीरें लेने में उसकी मदद करता है।

जब आप मैन्युअल मोड में शूट करते हैं, तो आप कैमरे के मीटर को एक्शन में देख सकते है। व्यूफ़ाइंडर के अंदर देखने पर अलग-अलग एक्सपोज़र कॉम्बिनेशन पर एक बार को शुन्य के बायीं और दायीं तरफ सरकता हुआ देख सकते है। बार का यह खिसकना अंडर और ओवर एक्सपोज़र को इंगित करता है। यदि आप कैमरा को तीव्र प्रकाश की और केंद्रित करते है तब ये बार + की तरफ जाता है तो इसका अर्थ है की कैमरा तक पहुँचने वाला प्रकाश आवश्यकता से अधिक है जबकि कैमरा को काम प्रकाशित क्षेत्र की और केंद्रित करने पर बार के - की तरफ खिसकने का अर्थ उचित एक्सपोज़र के लिए प्रकाश की मात्रा में कमी के होने से है। फिर आपको अपने कैमरा मीटर को, "0" पर पहुँचाने के लिए अपनी शटर स्पीड, अपर्चर और ISO को बढ़ाना या घटाना होगा।

एक कैमरा मीटर मैन्युअल मोड के साथ साथ अपर्चर प्रायोरिटी, शटर प्रायोरिटी या प्रोग्राम मोड इत्यादि मोड्स पर भी उपयोगी होता है क्योंकि ऐसे में कैमरा स्वचालित रूप से मीटर से जो भी पढ़ता है, उसके आधार पर सेटिंग्स को समायोजित करता है।

मीटरिंग मोड्स :

1. स्पॉट मीटरिंग (Spot Metering)
2. सेण्टर - वेटेड एवरेज मीटरिंग (Center - weighted Metering)
3. एवरेज मीटरिंग (Average Metering)
4. पार्शियल / सेलेक्टिव मीटरिंग (Partial / selective Metering)
5. मल्टी जोन / मैट्रिक्स / ईवालूवेटेड मीटरिंग (Multi Zone / Matrix / Evaluative Metering)

1. स्पॉट मीटरिंग (Spot Metering)

स्पॉट मीटरिंग केवल आपके सीन के फोकसिंग बिंदु के चारों ओर के प्रकाश का मूल्यांकन करता है और बाकी सभी चीजों को अनदेखा कर उस एकल क्षेत्र के आधार पर ही एक्सपोज़र की गणना करता है। डिफ़ॉल्ट रूप से, स्पॉट मीटर हमेशा व्यू फाइंडर के केंद्र में स्थित होता है। लेकिन आप लाइट मीटर के फ़ोकस पॉइंट को नेविगेटर बटन की सहायता अपनी इच्छानुसार बदल सकते है। यह आमतौर पर बहुत अधिक कंट्रास्ट दृश्यों को शूट करने के लिए उपयोग किया जाता है। बैक-लिटेड विषयों तथा जब आपका विषय पूरे फ्रेम में एक छोटी सी जगह ही घेर रहा होता जैसे चन्द्रमा के साथ आसमान, तब स्पॉट मीटरिंग बहुत अच्छा काम करता है। सामान्यतया ऐसे पिक्चर फ्रेम में मैट्रिक्स या सेंटर-वेटेड मोड का उपयोग करने से सब्जेक्ट के डिटेल के बदले उसका सिल्हूट प्राप्त होने की संभावना अधिक होती है। अधिकांश स्थितियों में स्पॉट मीटरिंग दृश्य के कुछ हिस्सों को ओवर या अंडर एक्सपोज़ करता है ताकि सब्जेक्ट का एक्सपोज़र सही रह सके।

2. सेण्टर - वेटेड एवरेज मीटरिंग (Center - Weighted Average Metering)

कभी कभी सही एक्सपोज़र निर्धारण के लिए पूरे फ्रेम का उपयोग करना हमेशा वांछनीय नहीं होता है। जब आप चाहते हैं कि कैमरा फ्रेम के मध्य को प्राथमिकता दे, तो इस मोड का उपयोग करें क्योंकि इस मोड में मीटर दृश्य के मध्य भाग के 60-80% भाग पर ध्यान देता है और पिक्चर फ्रेम के

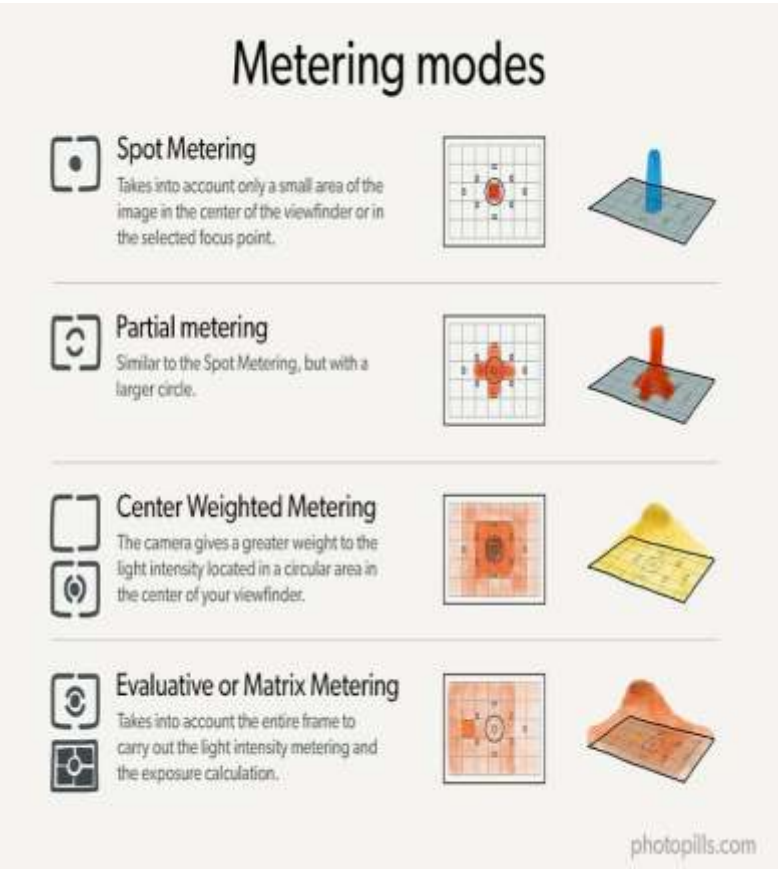

STUDIO NEWS
लखनऊ, सोमवार, 6 जुलाई 2020 से 5 अगस्त 2020

काफी लोगों को यह एहसास नहीं होता कि शौकिया फोटोग्राफरों के लिए फोटोग्राफी एक मजेदार अनुभव हो सकता है पर एक पेशेवर फोटोग्राफर के लिए फोटोग्राफी काफी मेहनतकश काम सिद्ध हो सकती है। - एडवर्ड वेस्टन

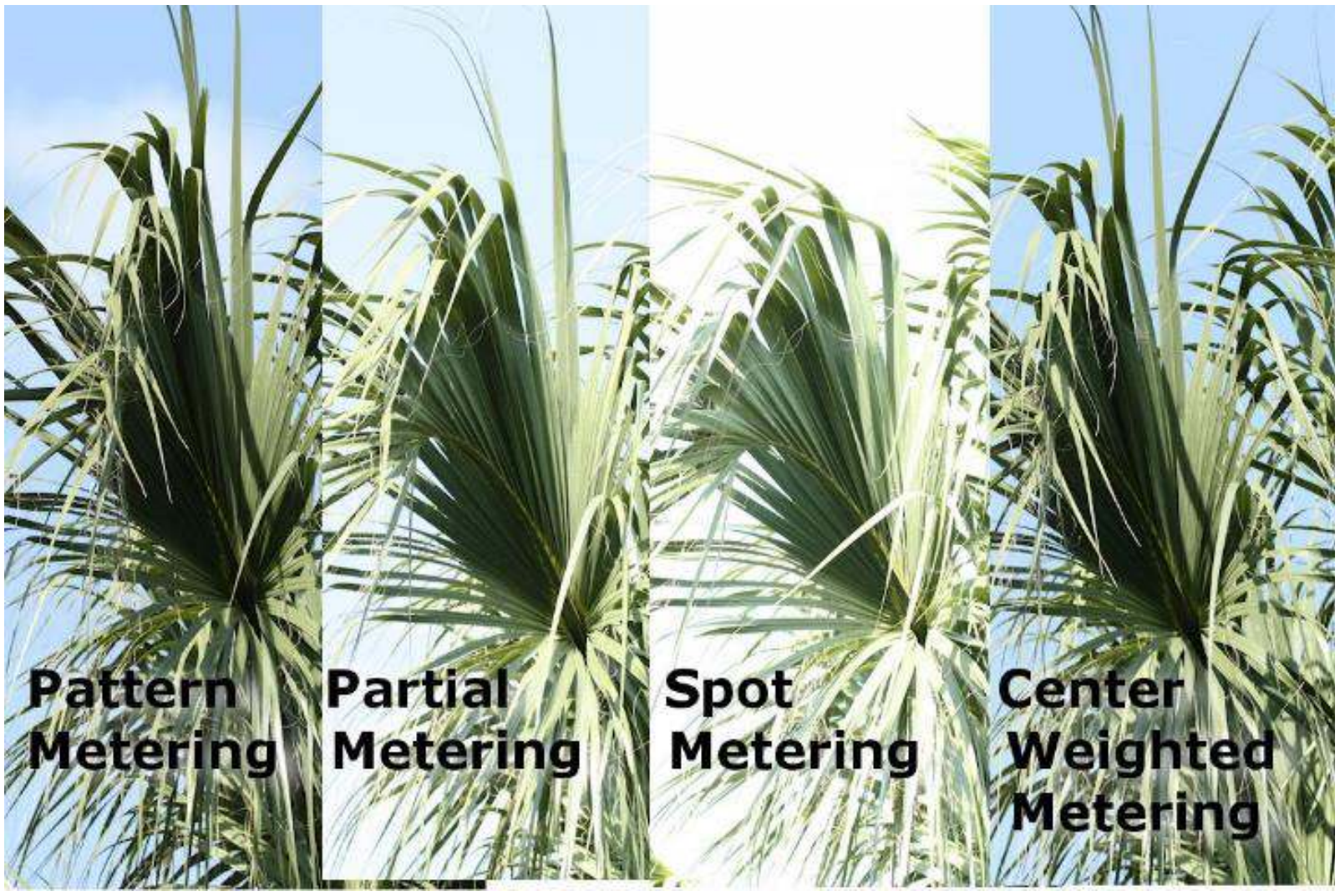

कोनों की उपेक्षा करते हुए फ्रेम के मध्य और उसके आसपास उपस्थित प्रकाश का मूल्यांकन करता है। वैसे तो मैट्रिक्स मीटरिंग की तुलना में, सेंटर-वेटेड मीटरिंग आपके द्वारा चयनित फोकस बिंदु पर ध्यान नहीं देता वरन केवल छवि के मध्य क्षेत्र का मूल्यांकन करता है। किन्तु कुछ कैमरा मॉडल्स फोकसिंग बिंदु को फ्रेम के मध्य भाग से उन्हें किनारों की तरफ शिफ्ट करने की भी सुविधा प्रदान करते हैं। ऐसे में फोकसिंग बिंदु के साथ साथ मीटरिंग बिंदु भी मध्य से बाहरी किनारे की और खिसक जाता है।

यह मोड ज़्यादातर ऐसे विषयों के लिए अधिक उपुक्त होता है जिसमे सब्जेक्ट फ्रेम के मध्य में होता हो और अधिकतर हिस्से को कवर करता हो। उदाहरण के लिए, यदि आप किसी व्यक्ति के सिर को उसके पीछे सूरज के साथ शूट करना चाहते हो, तो यह मोड व्यक्ति के चेहरे को सही ढंग से एक्सपोज़ करेगा और फ्रेम का बाकी हिस्सा ओवरएक्सपोज़ कर देगा।

3. एवरेज मीटरिंग (Average Metering)

इस सेटिंग में कैमरा पूरे पिक्चर फ्रेम या दृश्य के प्रकाश का विश्लेषण करता है तथा छाँव व् प्रकाशित हिस्सों के एक्सपोज़र्स का एवरेज निकाल कर अंतिम एक्सपोज़र निश्चित करता है। इस मोड में किसी भी हिस्से को कोई वरीयता नहीं दी जाती। कुछ खास परिस्थितियों जैसे बर्फीले भूदृश्यों को शूट करते समय 2 स्टॉप तक अंडर-एक्सपोज़र मिलता है क्योंकि यह मोड अत्यधिक ब्राइट दृश्य को गहरा कर देता है

4. पार्शियल / सेलेक्टिव मीटरिंग (Partial / selective Metering)

यह मोड स्पॉट मीटरिंग की तुलना में पिक्चर फ्रेम के अपेक्षाकृत बड़े क्षेत्र (पूरे फ्रेम का लगभग 10-15%) को कवर करता है, और आमतौर पर इसका उपयोग तब किया जाता है जब फ्रेम के किनारे बहुत ज़्यादा उज्ज्वल या बहुत छाया वाले हों और मीटरिंग को प्रभावित करने की क्षमता रखते हो। कुछ कैमरा मॉडल्स स्पॉट मीटरिंग की तरह ही इस मोड में भी प्रकाश की रीडिंग के लिए फिक्स्ड या परिवर्तनशील बिंदुओं का उपयोग करते हैं।

5. मल्टी जोन / मैट्रिक्स / ईवालूवेटेड मीटरिंग (Multi Zone / Matrix / Evaluative Metering)

अलग अलग कैमरा मॉडल्स में इस मोड को मैट्रिक्स / ईवालूवेटेड / हनीकांब / सेगमेंट / इलेक्ट्रो सेलेक्टिव पैटर्न (ESP) के नाम से भी जाना जाता है। कैमरा पूरे दृश्य फ्रेम से कई सारे ज़ोन्स से प्रकाश की तीव्रता को मापता है और इन सबको इकठ्ठा करके एक सर्वाधिक सही एक्सपोज़र की गणना करता है। गणना की विधि कैमरे से कैमरे में भिन्न हो सकती है। इन ज़ोन्स की संख्या कुछ से लेकर हज़ार तक हो सकती है।

मल्टी-ज़ोन सही एक्सपोज़र के लिए ऑटोफोकस बिंदु को पथप्रदर्शक की तरह प्रयुक्त करता है ताकि सब्जेक्ट ठीक तरीके से एक्सपोज़ हो। इसके लिए हजारों एक्सपोज़र का एक डेटाबेस कैमरे में प्री-स्टोर किया जाता है, और प्रोसेसर उस जानकारी का उपयोग यह निर्धारित करने के लिए कर सकता है कि क्या फोटो खींची जा रही है।

कुछ कैमरों में सब्जेक्ट पर फोकस हो जाने के बाद एक्सपोज़र लॉक का सिस्टम भी होता है। वहीँ कुछ अन्य में AF पॉइंट को एक्सपोज़र मापने के लिए प्रयुक्त नहीं किया जाता, ऐसे में व्यू फाइंडर का मध्य बिंदु डिफ़ॉल्ट मीटरिंग बिंदु होता है। विभिन्न निर्माताओं के बीच मल्टी जोन मीटरिंग को लेकर काफी भिन्नता देखने में आती है।

(डिस्क्लेमर - इस लेख में प्रयुक्त छवियां इंटरनेट से ली गयीं हैं जिनका उद्देश्य सिर्फ शैक्षिक हैं, व्यावसायिक नहीं।)

मोबाइल फोटोग्राफी के पॉपुलर गैजेट्स

लखनऊ के वरिष्ठ छायाकार **अतुल हुन्डू** मोबाइल फोटोग्राफी के क्षेत्र में खास काम कर रहे हैं। मोबाइल से कैसे बेहतर फोटो खींची जाए इस पर उनका यह आलेख –

स्मार्टफोन का दौर शुरू होने के बाद फोटोग्राफी सिर्फ प्रोफेशनल्स का काम नहीं रह गई। आज हर व्यक्ति अपनी पॉकेट में एक कैमरा लेकर घूमता है। आज का दौर सेल्फी के शौकीन का है। बाजार में इस डिमांड को हाथों हाथ लिया है। स्मार्टफोन कैमरा से फोटोग्राफी के लिए आज बहुत से गैजेट्स उपलब्ध है। उनमे से कुछ पॉपुलर गैजेट्स के बारे में हम आप से जानकारी साझा कर रहे हैं।

एक्सटर्नल लेंस किट - हम सभी जानते है कि स्मार्टफोन कैमरा का लेंस फिक्स फोकल लेंथ का होता है। इस कमी को ध्यान में रखते हुए कई सेकंड पार्टी लेंस की रेंज बाजार में उपलब्ध हैं। ये लेंस ज्यादातर 2 - 3 या 4 के बंडल में एक साथ मिलते हैं। जिसमें एक मैक्रोलेंस, एक वाइड एंगल लेंस और एक फिशआई लेंस होता है। इस तरह के लेंस किट की बहुत सी वेराइटी बाजार में उपलब्ध है। 250 रू से लेकर 10000 रू तक की रेंज में यह लेंस, आसानी से अमेजन, फ्लिपकार्ट आदि पर मिल जाते हैं।

ओलोक्लिप, ऑके, मोमेंट आदि कंपनियों के लेंस थोड़े महंगे जरूर हैं। इनकी क्वालिटी और एज शार्पनेस बहुत अच्छी है। इसके अलावा कई सस्ते अरेंप्शन भी है। जहाँ वाइड एंगल लेंस की मदद से आप 120mm से लेकर 180mm के बढ़िया लैंडस्केप, इंटीरियर्स व पैनोरमिक व्यूज क्लिक कर सकते हैं, वही दूसरी तरफ मैक्रो लेंस आप के लिए नन्ही दुनिया के द्वार खोल देता है। 10X, 15X और 20X मैगनीफिकेशन के अलग-अलग मैक्रो लेंस की मदद से आप आसानी से नन्हे कीड़े मकौड़े, ओस की बूंदे व अन्य अत्यंत छोटी चीजों की बेहतरीन तस्वीरें ले सकते हैं। स्मार्टफोन के छोटे सेंसर की वजह से मिलने वाली बढ़िया डेप्थ ऑफ फील्ड के साथ ये मैक्रो लेन्स बेहतरीन परफॉरमेंस देते है। टेलीलेंस की बात करें तो 2X से लेकर 12X तक के सुपरजूम जूम भी हैं। इन लेंस की रेंज ऑनलाइन आसानी से उपलब्ध है। इनमे से ज्यादातर लेंस यूनिवर्सल होते हैं, कहने का मतलब है इन्हे किसी भी ब्रांड के मोबाइल फोन के साथ इन्हें प्रयोग किया जा सकता है।

ट्राइपॉड/मोनोपॉड/गोरिल्लापॉड - यह सभी कम रौशनी या लॉन्ग एक्सपोजर के दौरान आप की तस्वीर को स्टैब्लाइज करने में मदद करते हैं। इसकी सहायता से आप लाइट ट्रेल्स जैसे इफेक्ट क्रिएट कर सकते है. 200 रू. से इसकी रेंज शुरू होती है।

स्मार्टफोन ट्राइपॉड माउंट / टाइट ग्रिप माउंट / स्मार्ट क्लैंप - इस माउंट की सहायता से आप अपना स्मार्टफोन किसी भी ट्राइपॉड पर लगा सकते हैं। लॉन्ग एक्सपोजर वाले शॉट्स के लिए यह बहुत उपयोगी है। मैनफ्रोटो कंपनी जोकि ट्राइपॉड्स की एक जानीमानी कंपनी है, ने डिमांड को देखते हुए अपना एक स्मार्टक्लैंप बाजार में उतारा है, यह क्लैंप 750 रू की कीमत पर मिल रहा है। इसके सस्ते ऑप्शन 100 रूपए की कीमत से शुरू होते है। यह क्लैंप किसी भी स्मार्ट फोन में फिट हो जाते हैं।

स्मार्ट फोन कैमरा रिमोट - शटर जैसे ब्रांड आप को रिमोट की मदद से क्लिक करने का ऑप्शन देते हैं। अगर आप सेल्फी स्टिक नहीं प्रयोग करना चाहते तो ऐप की सहायता से आप के मोबाइल से यह रिमोट कनेक्ट हो जाते है। कभी-कभी जब बड़े ग्रुप के साथ खुद की सेल्फी लेनी हो तो यह बहुत काम आते है। कम रौशनी में स्टैंड पर माउंट फोन कैमरा को कंट्रोल करने के लिए भी यह बहुत उपयोगी है।

पॉकेट स्पॉटलाइट - मोबाइल फोटोग्राफी में फ्लैश से करने पर अक्सर तस्वीरें अच्छी नहीं आती। इस परेशानी को समझते हुए कई अलग अलग ब्रांड्स के पोर्टेबल स्पॉट लाइट उपलब्ध हैं। ये कांस्टेंट लाइट सोर्स फ्लैश लाइट की तुलना में सॉफ्ट लाइट प्रदान करते हैं। आप इन्हे मोबाइल के हैडफोन पोर्ट में कनेक्ट किया जा सकता है। इनमे लगी बैटरी रीचार्जेबल होती है जिसे यूएससबी की सहायता से चार्ज किया जा सकता है। आई-ब्लेजर जैसी कई कंपनी वायरलेस एलईडी फ्लैश बनाती है।

सेल्फी स्टिक - सल्फी स्टिक्स का प्रयोग सेल्फी लेने के अलावा थोड़ी ऊँचाई से तस्वीरें लेने के लिए भी किया जा सकता है। इनका इस्तेमाल बहुत आसान है एक हाथ से इन्हें प्रयोग किया जा सकता है ये सस्ती होती है और आसानी से इन्हें रखा भी जा सकता है।

बिवेल - हेड फोन में अटैच होने वाला बिवेल एक सिंपल अटैचमेंट है जिसकी सहायता से आप अपने स्मार्ट फोन से 3 डी तस्वीरें क्लिक कर सकते है। यह अटैचमेंट किसी भी फोन के हैडफोन जैक में फिट हो जाता है। इन तस्वीरों को 3डी प्रिंटर की सहायता से प्रिंट किया जा सकता है।

अंडरवाटर केसिंग - स्मार्टफोन द्वारा अंडरवाटर फोटोग्राफी के लिए भी कई गैजेट्स उपलब्ध है इस केसिंग की सहायता से आप पानी में 10 मीटर की गहराई में 30 में तक वीडियो फोटो या वीडियो शूट कर सकते है। एडवेंचर फोटोग्राफी के शौकीन लोगों के लिए यह बहुत खास है। इन अंडर वाटर केसिंग में एक वाइड एंगल लेंस लगा होता है। जैसे हिटकेस अथवा आप्ट्रिक्स एक्सडी 5 केस कंपनी की केसिंग में 170 एमएम का लेंस लगा है जो केसिंग के साथ स्मार्टफोन के लेंस पर फिट हो जाता है और भी कई सस्ते ऑप्शंस पाउच की शक्ल में अंडरवाटर फोटोग्राफी के लिए मिल जाते है।

STUDIO NEWS
लखनऊ, सोमवार, 6 जुलाई 2020 से 5 अगस्त 2020

फोटोग्राफी सिर्फ वर्तमान को ही दर्शा सकती है। फोटो खींचते ही वर्तमान का वह पल भूतकाल में परिवर्तित हो जाता है। - बेरेनिस अब्बोट

टीम बनाओ - सफल हो जाओ

बड़ी सफलता पाने के लिए खुद को क्या करना पड़ेगा? इसी फलसफे को बताता आनन्द कृष्ण लाल का आलेख

कहते हैं कि अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता। बड़े बुजुर्गों की कही हुई ये कहावत एकदम सही है। जी हाँ ! आप कितने ही सक्षम हों, प्रतिभाशाली हों लेकिन कुछ बड़ा करने के लिए एक अच्छी टीम की आवश्यकता होती है। एक सफल टीम को बना कर काम करना भी एक कला है। यहाँ टीम का मतलब ऐसे लोगों का एक समूह से है जो किसी एक लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए साथ-साथ काम करें।

हम सब अपने व्यापर में, नौकरी में और यहाँ तक कि परिवार में भी एक टीम की तरह काम करते हैं। एक सफल टीम के लोग आपस की कोई भी लड़ाई या विभिन्न व्यक्तिगत विचारधारा को किनारे रख कर टीम की सफलता के लिए कार्य करते हैं। टीम के सारे सदस्य एक दुसरे से कॉम्पेटीट करने के लिए नहीं बल्कि एक दूसरे को कम्पलीट करने के लिए कोई कार्य करते हैं। एक अच्छा टीम लीडर वही होता है जो टीम के सभी सदस्यों की प्रतिभा और आदतों के बारे में जानता है।

अच्छी टीम बनाने के लिए यहाँ कुछ बातों को समझना जरूरी है। जिसमें सबसे पहले है - कार्य का एक साझा या कॉमन लक्ष्य बनाना। एक अच्छा टीम लीडर अपनी टीम के सभी सदस्यों को उनके साझा लक्ष्य के बारे में समझाता है, और साथ ही ये भी समझाता है कि ये लक्ष्य सफलतापूर्वक हासिल करने के बाद उनके अपने जीवन में और बाहर की दुनिया में क्या पॉजिटिव असर पड़ेगा।

दूसरी आवश्यक बात है - टीम में सकारात्मक या पॉजिटिव माहौल को बनाये रखना। जिसके लिए टीम लीडर पूरी तरह से जिम्मेदार है। ऐसा करने के लिए हमेशा टीम के हर सदस्य की बातों या फीडबैक पर ध्यान देना, उनके काम करने को प्रोत्साहित करना तथा काम को सफल बनाने की भावना जाग्रत करना आता है। पूरी टीम को एक पॉजिटिव माहौल में काम करवाने की आवश्यकता होती है जिससे उन सब के अंदर इतना जोश भरा रहे कि वो कार्य करने के दौरान आने वाली हर चुनौती या समस्या से हिम्मतपूर्वक लड़ सकें।

इसके बाद आवश्यक है कि टीम के हर सदस्य का उत्साह वर्धन किया जाये। टीम का हर सदस्य चाहे जितना भी काबिल हो यह जरूरी है कि टीम के रूप में काम करने पर एक दूसरे का उत्साह बढ़ाते रहे। इससे पूरी टीम का प्रदर्शन हमेशा जोश भरा रहेगा। इसका जीवंत उदाहरण क्रिकेट की टीम है। कप्तान उनका टीम लीडर है और मैदान पर वो सबका उत्साह बढ़ाता रहता है, वहीं टीम के दूसरे सदस्य का भी उत्साह बढ़ाते रहते हैं।

उत्साह बढ़ाने के बाद अगली आवश्यक बात है - 'अनुशासन', सफल होने के लिए किसी भी टीम का अनुशासन में होना जरूरी है, और इसके लिए सबसे ज्यादा जरूरी है टीम लीडर का पूर्ण रूप से अनुशासित होना। जैसा कि वो टीम के सदस्यों से उम्मीद कर रहा है उससे कहीं ज्यादा उसको खुद अनुशासित रहने की आवश्यकता है।

अच्छा व्यवहार - इस कड़ी में अगली आवश्यक बात है, जब आप खुद चाहते हैं कि हर कोई आपसे अच्छा व्यवहार करे। तो टीम लीडर के तौर पर आपकी जिम्मेदारी बनती है कि आप सबसे अच्छा व्यवहार करें और टीम के अन्य सदस्यों को भी प्रेरित करें कि वो आपस में एक दूसरे से अच्छा व्यवहार करें। किसी भी एक सदस्य की ओर किया गया आपका बुरा व्यवहार आपकी टीम में अलगाव पैदा कर सकता है।

एक बहुत आवश्यक बात है और वो है लक्ष्य का एलाइनमेंट। जैसे हम जानते हैं किसी भी कार के चारों पहिये एक दिशा में चलने के लिए अलाइन किये जाते हैं, तभी कार एक दिशा में चल पाती है। उसी तरह टीम के हर एक सदस्य का उसके कार्य को लेकर एलाइनमेंट उसके सभी साथियों के साथ होना चाहिए।

लक्ष्य एलाइनमेंट के बाद जरूरी है कि काम पूरा होने पर अच्छे कार्य के लिए टीम के हर सदस्य को उसका श्रेय देना चाहिए, और प्रशंसा की जानी चाहिए। और यदि कहीं कोई कमी या असफलता रह जाये तो टीम लीडर को उसकी जिम्मेदारी स्वयं लेनी चाहिए। हर किसी को अपने अच्छे किये गए कार्य के लिए प्रशंसा चाहिए होती है। ऐसा करने से वो हमेशा टीम और टीम लीडर के साथ जुड़कर काम करना चाहेगा।

सबसे अंत में यह ध्यान रहे कि अपनी टीम को कभी निराश या हताश न होने दें। किसी भी कार्य के दौरान आनेवाली तमाम समस्याओं से टीम का मनोबल न टूटने पाए। टीम लीडर को बहुत धैर्य से काम लेना होता है। अपना हौसला कभी भी टूटने न दें। निराशा का माहौल पैदा न होने दें।

दोस्तों, कुछ बड़ा और सार्थक करने के लिए अच्छी टीम का बनाना और ऊपर लिखी हुई बातों को ध्यान देते हुए कार्य करना आवश्यक है। इन सारी आवश्यक बातों को ध्यान में रखने और करने से आप भी एक सफल व्यक्ति बन सकते हैं।

•

स्टूडियो न्यूज तिमाही फोटो प्रतियोगिता

फोटोग्राफी में अपना नाम और पहचान बनाने के साथ-साथ उपहार पाने और स्टूडियो न्यूज में प्रकाशित होने का मौका। उठाइये अपना कैमरा, रचनात्मक तस्वीरें खींचे और हमें भेजें।

नियम :

1. फोटो केवल डिजिटल रूप में भेजनी है। फाईल का फार्मेट **JPEG** होना चाहिए।
2. फोटो कलर या **B/W** कोई भी हो सकती है।
3. फोटो का साइज **8x10** इंच में एवं **300 dpi** की होनी चाहिए।
4. फोटो के ऊपर कोई वाटर मार्क या नाम नहीं लिखा होना चाहिए।
5. कम्पटीशन में अधिकतम 2 फोटो ही भेज सकते हैं।
6. प्रतिभागी अपनी फोटो के लिए स्वयं जिम्मेदार होगा। किसी दूसरे की फोटो होने पर स्टूडियो न्यूज जिम्मेदार नहीं होगा।
7. फोटोग्राफर अपनी पासपोर्ट साइज फोटो, पूरा पता एवं फोन नम्बर अवश्य भेजें अन्यथा उनकी फोटो प्रतियोगिता में शामिल नहीं की जायेगी।

प्रतियोगिता की अन्तिम तिथि 28 जुलाई 2020

पुरस्कार
32GB पेनड्राइव

निर्णायक दल

वरिष्ठ छायाकार
अनिल रिसाल सिंह

आर्ट्स कॉलेज के पूर्व प्रिंसिपल
जयकृष्ण अग्रवाल

फोटो infostudionewsup@gmail.com पर मेल करें।

फूड फोटोग्राफी में रंगो का संयोजन

स्मिता श्रीवास्तव
फूड स्टाइलिस्ट एडं फोटोग्राफर

आर्ट और फोटोग्राफी में रंग बहुत ही महत्त्वपूर्ण भूमिका रखते हैं। सही रंगो का चयन जहाँ एक चित्र को मनमोहक बना सकता है वहीं गलत रंग संयोजन (कलर स्कीम) का इस्तेमाल करते ही अच्छे से अच्छा फ्रेम भी अपना आकर्षण खो देता है। हमारी इन्द्रियों और रंगो में गहरा सम्बन्ध है, कुछ रंगो को देख कर हमें खुशी का एहसास होता है, जबकि फीके रंगो को देख कर मन बुझ सा जाता है। गहराई से रंगो को समझने पे कई आश्यर्जनक तत्त्व सामने आते हैं - जैसे कि रंगो का इस्तेमाल करके एक कलर थेरेपिस्ट रोगों का निवारण कर सकता है, रंगो का प्रयोग करके एक मनोवैज्ञानिक अपने मरीज़ की मानसिक स्थिति को भाँप सकता है या फिर एक विजुअल आर्टिस्ट सही रंगो का विज्ञापनों में चुनाव करके अपने क्लाइंट के प्रोडक्ट की सेल बढ़ा सकता है। विश्वास न हो तो अपने दिमाग पे ज़ोर दीजिये और याद करिये फ़ास्ट फूड चेन्स के बाहर इस्तमाल हुए तीखे सुर्ख रंग या फिर एसी, कूलर या फ्रिज की दुकानों में बखूबी से इस्तेमाल हुए नीले सफ़ेद रंग। कितनी ही बार आपको इन दोनों के रंगो ने प्रभावित किया होगा और रंगो के असर से वशीभूत होकर आपने अपना पसंदीदा फ़ास्ट फूड आर्डर किया होगा या उस इलेक्ट्रॉनिक उपकरण की दुकान से सामान खरीदते समय रंगो की ठंडक को महसूस किया होगा।

उपरोक्त उदाहरणों की तरह फूड फोटोग्राफी में भी रंगो का बड़ा योगदान होता है और एक फोटोग्राफर का दायित्त्व उन रंगो को सही से उभारना होता है। जैसा कि हम सब जानते है कि फूड फोटोग्राफी का पूर्ण मकसद खाद्य पदार्थो के चित्रों द्वारा हमारी इन्द्रियों को सक्रिय करना होता है और सही रंगो का चयन इस कार्य को आसान कर देता है। लाल टोमेटो केचप की बोतल से साथ यदि कम लाल या पीले हरे टमाटर रख दिए जाये, या फिर यदि दाल या सब्ज़ी हल्की पीली लगे तो बेशक आप घर में उसे खा लोगे परन्तु आप उस चित्र में देखकर खरीदना या आर्डर करना कभी पसंद नहीं करेंगे क्योंकि वह फीके रंग आप की स्वाद कलिकाओं को सक्रिय नहीं कर पाएंगे।

आर्ट, क्राफ्ट या डिज़ाइन के आयामों की तरह फूड फोटोग्राफी में रंगो का सही चयन करने के लिए हमें कलर व्हील को अच्छे से समझना पड़ेगा, शुरूवात में यह थोड़ा मुश्किल सा प्रतीत हो सकता है परन्तु इस्तेमाल करते-करते कलर स्कीम्स दिमाग में खुद-ब-खुद बैठ जाएंगे। लेख में छपे कलर व्हील को काट के अपने पास रख लीजिये और शॉट की प्लानिंग करते हुए या प्रॉप्स और बैकग्राउंड का चयन करते हुए ज़रूर रेफर कीजिये, आपके साधारण से दिखने वाले शॉट्स थोड़ी सी प्लानिंग के साथ किसी पत्रिका या विज्ञापन के फूड शॉट से से कम नहीं लगेंगे।

फूड फोटोग्राफी में सही रंगो का चयन करने की पूरी प्रक्रिया को समझने से पहले हमें कलर व्हील और बेसिक कलर स्कीम्स को समझना बहुत ही आवश्यक है।

बेसिक कलर व्हील

कलर व्हील को मध्य 16वीं शताब्दी में महान वैज्ञानिक न्यूटन द्वारा दर्शाया गया था और यहीं से यह साबित हुआ कि सफ़ेद या प्योर लाइट को मुख्यता 7 रंगो में विभाजित किया जा सकता है - लाल, नारंगी, पीला, हरा, नीला, इंडिगो और बैगनी। इन सातो रंगो को उसने 7 स्वरों से भी जोड़ कर अपनी थ्योरी को एक अलग स्तर दिया था। इसी कलर व्हील से अन्य कलर स्कीम्स का प्रादुर्भाव हुआ।

प्राथमिक रंग (प्राइमरी कलर्स)

कलर व्हील के तीन मुख्य रंग होते हैं - लाल, पीला और नीला जिन्हें हम प्राइमरी कलर्स कहते हैं। यह रंग अपने आप में परिपूर्ण होते है, जहाँ इन रंगो को मिश्रित करके सैकड़ो ही रंगो को बनाया जा सकता है, वहीं किसी भी रंग को मिला के इन्हें नहीं बनाया जा सकता है। सुर्ख और चटख होने की वजह से, यह रंग तीव्रता, रफ्तार या आपातकालीन स्थिति को सूचित करते है।

द्वितीयक रंग (सेकेंडरी कलर्स)

यह कलर्स 2 प्राइमरी कलर्स को मिश्रित करके बनाये जाते हैं। पीला और नीला मिल कर जहाँ हरा बनता है वहीं नीले और लाल से बैगनी और लाल और पीले से नारंगी।

टर्शरी (Tertiary) रंग

ये रंग एक प्राइमरी कलर और उस के समीप वाले एक सेकेंडरी कलर के मेल से बनते है। प्राइमरी या सेकेंडरी रंग के मात्रा में फेर-बदल कर के हम 6 टर्शरी (Tertiary) रंगो को बना सकते है जैसे लाल और नारंगी को लेके - red-orange, पीले और नारंगी को लेके yellow-orange, पीले और हरे को लेके yellow-green, नीले और हरे को लेके blue-green, नीले और बैगनी को ले के blue-violet और लाल और बैगनी को लेके red-violet।

वार्म एंड कूल कलर्स

कलर व्हील को हम मुख्यता 2 भागो में विभाजित कर सकते हैं - वार्म एंड कूल। किसी भी चित्र का मूड दर्शाने के लिए यह रंग बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका रखते हैं। लाल, पीला और नारंगी वार्म कलर्स के अंतर्गत आते हैं और कूल कलर्स की उपेक्षा चटख, चमकीले और हमारी इन्द्रियों को उत्तेजित करने वाले होते हैं। यह रंग हमें फेस्टिव फील, वार्मथ और खुशी जैसे तीव्र भावों का आभास कराते हैं। फूड फोटोग्राफी में इनका इस्तेमाल भी इन्हीं इमोशंस को दर्शाने के लिए किया जाता है। तीखे मसालेदार व्यंजन, पारम्परिक या त्योहारिक फूड्स, सर्दियों के व्यंजन, जंक फूड इत्यादि का परिपूर्ण आभास दिलाने के लिए इनका इस्तेमाल किया जाता है।

वही कूल कलर्स हरा, नीला और बैगनी रंगो का मूड सूथिंग और ठंडक प्रदान करने वाला होता है, इसलिए इनका इस्तेमाल ग्रीष्म ऋतू का हल्का सुपाच्य भोजन, शीतल पेय, ताज़ी हरी सलाद और इन्द्रियों को ठंडक देने वाले खाद्य पदार्थो को खूबसूरती से दर्शाने के लिए होता है।

उदहारण के तौर पर हल्के रंग की बैकग्राउंड, एक दूध के गिलास, कुछ अंडो के साथ एक सफ़ेद प्लेट पर रखी एक कपकेक जहाँ आप को ग्रीष्म ऋतु की एक सुबह का आभास कराएगी, वहीं भूरे काले रंग की लकड़ी की बैकग्राउंड कुछ लाल पीली पत्तियाँ और गहरे रंग की प्लेट पे रखी वही कपकेक आपको पतझड़ या ठण्ड की अँधेरी शाम का।

एनालॉग्स कलर्स

यह वह कलर्स होते हैं जो कलर व्हील में एक दुसरे के अगल-बगल होते हैं। एक जैसे कलर परिवार में होने की वजह से ये 2, 3 या 4 साथ प्रयोग करने पर भी तस्वीर में रंगो का संतुलन बनाये रखते हैं और मस्तिष्क और आँखो को सुखदायक लगते हैं। मिलते जुलते रंगो की फल-सब्ज़ियों या खाद्य पदार्थ सफ़ेद, काले या अपने से मिलते जुलते रंगो की बैकग्राउंडस या प्रॉप्स के साथ खूब जंचते हैं और हर सामग्री को चित्र में बराबर की महत्ता देते हैं।

कॉम्प्लिमेंटरी कलर्स

कलर व्हील में एक दुसरे के विपरीत रंगो को इस्तेमाल करके कॉम्प्लिमेंटरी कलर स्कीम बनती है। उदाहरण के तौर पर लाल और हरा। सेकेंडरी और टर्शरी कलर्स को भी इस्तेमाल करके बखूबी संयोजन (कॉम्बिनेशंस) बनाये जा सकते है जैसे कि पीला और बैगनी या नीला और नारंगी। यह कलर स्कीम का प्रयोग न सिर्फ पिक्चर में कन्ट्रास्ट बढ़ाता है बल्कि पिक्चर को संतुलन और नया आयाम देता है।

न्यूट्रल कलर्स

इन रंगो की हमारे आस-पास भरमार रहती है परन्तु कलर व्हील में यह नहीं दर्शाये जाते हैं। काला, सफ़ेद, भूरा और सिलेटी (ग्रे) इन् रंगो के अंतर्गत आते हैं। यह रंग अकेले या अन्य कलर स्कीम्स के साथ बहुत ज़्यादा इस्तेमाल होते हैं। इन रंगो को अन्य रंगो के साथ मिला के उन्हें हल्का या गहरा बनाया जा सकता है।

मोनोक्रोमेटिक कलर्स

इसके अंतर्गत एक रंग का चयन करके, उसमें काला या सफ़ेद मिला के अनगिनत हलके और गहरे टोन्स बनाये जा सकते हैं। काले से सफ़ेद, बेबी पिंक से मैरून या हलके हरे से गहरे हरे तक का अनगिनत रंगो के समन्वय का सफर मोनोक्रोम के अंतर्गत आता है। मोनोक्रोम चित्र में लगा एक अलग परिवार का कलर साधारण चित्र की खूबसूरती चौगुनी कर देता है।

रंगो को भली भाति उभारने में लाइट सबसे एहम भूमिका निभाती है, अच्छी से अच्छी कलर स्कीम सही लाइट इंटेंसिटी और टेम्परेचर के आभाव में नीरस लग सकती है इसलिए फूड फोटोग्राफी के दौरान सही लाइट का चयन ध्यान पूर्वक करें।

STUDIO NEWS
लखनऊ, सोमवार, 6 जुलाई 2020 से 5 अगस्त 2020

इंसान की इंसान से पहचान कराने में फोटोग्राफी एक अहम जरिया है। - एडवर्ड स्टीकेन

वेडिंग फोटो शूट में बड़े काम आएगा हाई स्पीड सिंक फ्लैश

हाई स्पीड सिंक मोड के जरिए 1/4000 या 1/8000 को शटर स्पीड बढ़ा सकते हैं और डेप्थ ऑफ फील्ड के लिए 1.8 या 2.8 जैसी f स्टॉप का इस्तेमाल कर सकते हैं।

हाई स्पीड सिंक क्या है? वेडिंग या असाइनमेंट में ये क्यों जरूरी है, इसकी खूबियों और बारीकियों के बारे में बता रहे हैं **आर. प्रसन्ना**

हाई स्पीड सिंक क्या है? हमारे द्वारा उपयोग किए जाने वाले डीएसएलआर कुछ फ्लैश सिंक स्पीड कहलाते हैं। स्टूडियो लाइट्स या स्पीडलाइट्स आमतौर पर जिसकी शटर स्पीड 1/125 या 1/200 होता है, वेडिंग इवेंट या अन्य महत्वपूर्ण असाइनमेंट शूट करते वक्त अगर गलती से हम 1/250 से अधिक की शटर स्पीड कर देते हैं तो हमें बेहद काले बैंड के साथ फोटोग्राफ मिलता है। फ्रेम के निचले हिस्से में काला दिखाई देता है, जबकि फ्रेम का टॉप ठीक से उजागर होता है। इसका नतीजा हम एक खास इवेंट में अच्छे फोटो का मौका गवां देते हैं और बेवजह तनाव में आ जाते हैं।

कैमरा की शटर फ्लैश सिंक को स्पीड 1/125 से अधिक क्यों नहीं किया जा सकता है? क्योंकि डीएसएलआर में इस्तेमाल होने वाले शटर को फोकल प्लेन शटर कहा जाता है। यदि आप लीफ शटर के साथ हसेलबैल्ड कैमरे से फोटो शूट कर रहे हैं तो यह समस्या कभी नहीं आती है। लीफ शटर फ्लैश को हाई शटर स्पीड से सिंक किया जा सकता है और यही वजह है कि ज्यादातर फोटोग्राफरों शूटिंग के लिए मध्यम फॉरमेट का इस्तेमाल करते हैं।

अब सवाल उठता है कि डीएसएलआर की इस खामी को दूर कैसे किया जाए? 1/8000 तक फ्लैश सिंक कैसे करें? ये सवाल न सिर्फ फोटोग्राफर्स का था बल्कि कैमरा निर्माताओं के मन में भी था। इसलिए कंपनियां 'हाई स्पीड सिंक' के नाम से इसका एक शानदार समाधान के साथ आईं।

निकॉन ने इसको ऑटो एफपी मोड का नाम दिया है इस मोड के जरिए आप बिना किसी उलझन के 1/8000 तक फ्लैश को सिंक कर सकते हैं। लेकिन इसके साथ भी एक पेंच यह फंसता है कि आपको एचएसएस फ्लैश सपोर्ट करने वाले कॉम्पेटिबिल फ्लैश की जरूरत होती है। मिसाल के तौर पर सामान्य 2000 रूपये का

स्पीडलाइट सपोर्ट नहीं करता है, ऐसा ही सामान्य स्टूडियो लाइट के साथ भी है। सामान्य स्टूडियो लाइट हाई स्पीड सिंक नहीं करता है, भले ही कैमरा इसको सपोर्ट करता हो। ऐसा क्यों?

क्योंकि हाई स्पीड सिंक मोड में फ्लैश स्वंय एक सिंगल फ्लैश नहीं है, बल्कि स्पीड पल्स की एक सीरीज है। आपको यह जानकर हैरानी होगी कि फ्लैश पल्स एक सेकेंड में 30,000 तक और एक फ्लैश से ज्यादा कंटिन्यूअस लाइट की तरह काम करता है।

इस विकल्प का इस्तेमाल करने के लिए एचएसएस मोड और इनबिल्ट कूलिंग सिस्टम के साथ एक कॉम्पेटिबिल फ्लैश आवश्यक है। अगर स्पीडलाइट में इनबिल्ट कूलिंग मैकेनिज्म नहीं है तो यह बहुत जल्द ही गर्म हो सकता है और फ्लैश को जल्द ही मरम्मत की जरूरत पड़ सकती है।

इसलिए निकॉन, कैनन, गॉडॉक्स जैसी कंपनियों ने हाई स्पीड सिंक मोड के साथ ये फ्लैश तैयार किए हैं। कैनन के इओएस 5 डी मार्क III या मार्क IV जैसे कैमरों में एक अलग सब मेनू है जो बाहरी स्पीडलाइट कंट्रोल मेनू के साथ होता है।

अगर मोड एनेबल है, तो आप ब्लैक बैंड के बारे में चिंता किए बिना शूट कर सकते हैं या इस मोड को एक्टिव करने के लिए स्पीडलाइट में लाइट बोल्ट बटन दबा सकते हैं। निकॉन में भी डी 90 में हाई स्पीड सिंक के लिए एक ऑटो एफपी मोड है।

तो हाई सिंक स्पीड का इस्तेमाल करने के बजाय इस मोड के फायदे क्या हैं? वेडिंग फोटोग्राफरों के लिए यह कैसे फायदेमंद है? इसका बहुत ही मजेदार जवाब है आप सूरज को अपने हक में कर सकते हैं !!

अगर आप तेज चमकदार डेलाइट में शूटिंग करते समय 2.8 फील्ड एपर्चर का इस्तेमाल करना चाहते हैं। कैमरे की नॉर्मल सिंक स्पीड 1/125 आपको 5.6, f8 या f11 जैसे एपर्चर का इस्तेमाल करने के लिए मजबूर करेगी नहीं तो खींची गई तस्वीर ज्यादा ही चमक जाएगी।

एचएसएस मोड के जरिए 1/4000 या 1/8000 को शटर स्पीड बढ़ा सकते हैं और डेप्थ ऑफ फील्ड के लिए 1.8 या 2.8 जैसी f स्टॉप का इस्तेमाल कर सकते हैं। निकॉन भी कमांडर मोड में हाई स्पीड सिंक सपोर्ट करता है लेकिन बिल्ट फ्लैश में एचएसएस के साथ नहीं। आपको इस ऑप्शन के इस्तेमाल के लिए एसबी 700 या एसबी 910 की तरह एक एक्सटर्नल स्पीडलाइट की जरूरत होती है। एचएसएस मोड फोटोग्राफर्स को फील्ड में तेजी से और क्रिएटिव काम करने में मदद करता है।

आम तौर पर मैं कैमरे और फ्लैश हाई स्पीड सिंक मोड में रखता हूं क्योंकि वेडिंग शूट करते वक्त अगर गलती से शटर स्पीड सिंक स्पीड से अधिक भी बढ़ा देता हूं तो मुझे तस्वीर में ब्लैक बैंड नहीं मिलेगा।

R. Prasana
Photographer & Photo Mentor
Chennai

चाइल्ड फोटोग्राफी

अभिनीत सेठ

हेलो दोस्तों, जैसा की पिछले बार के अंक में आप सब ने पढ़ा कि किस प्रकार से चाइल्ड फोटोग्राफी में विभिन्न प्रकार के नियमों का ध्यान रखना पड़ता हैं। अच्छी लोकेशन, लाइट्स की वैरायटी, बैकग्राउंड की इम्पोर्टेंस, प्रॉप्स की अहमियत, वक़्त का निर्धारण, वग़ैरा जैसी बहुत सी बातें थी जिनका होना एक खूबसूरत फोटोशूट के लिए कितना महत्व रखता हैं। सिर्फ अच्छे और महंगे कैमरे का होना ही एक अच्छी तस्वीर के लिए जिम्मेदार नहीं होता, इसके अलावा लोकेशन और लाइट्स का भी एक महत्वपूर्ण रोल होता है। इसलिए आज हम लोकेशन की इम्पोर्टेंस पे बात करेंगे। जैसे एक अच्छे मकान के लिए मजबूत नींव की जरूरत होती हैं उसी प्रकार से एक अच्छे फोटोशूट के लिए एक सुटेबल लोकेशन की जरूरत होती है। लोकेशन का महत्व अपने आप बहुत ज्यादा इसलिए होता हैं क्यूंकि उसी हिसाब से आपकी बाकी चीज़ें डिसाइड होती हैं। बाकी चीज़ो में कॉस्ट्यूम, आर्टिफीसियल लाइट और प्रॉप्स जैसी जरूरत की चीज़ें आती हैं। अब अगर लोकेशन आउटडोर है तो हमारा मेन सोर्स ऑफ़ लाइट हमेशा सनलाइट होता हैं। सनलाइट के मेन सोर्स होने के अपने कई फायदे होते हैं। सनलाइट अपने आप में बहुत वास्ट होने की वजह से कई तरह से काम आती हैं।

मसलन आपकी लोकेशन में अगर सनलाइट बहुत हर्ष आ रही है तो आप ऐसी स्थिति में 2 काम कर सकते हैं। पहला या तो आप स्किमर या स्किमर जैसी कोई चीज़ जैसे व्हाइट बेडशीट या व्हाइट चार्ट पेपर (बड़े साइज़ का) का इस्तेमाल कर सकते हैं। इसका इस्तेमाल लाइट को हल्का करने या उसकी हार्शनैस कम करने के लिए होता हैं। हार्शनेस कम होने से सब्जेक्ट पे लाइट काफी सॉफ्ट हो जाती हैं और लाइट के सॉफ्ट होने से पोर्टेट में इमोशंस आ जाते है। और इमोशन्स आने से फोटोग्राफ काफी अट्रैक्टिव लगती हैं। और दूसरा काम आप कर सकते है अगर सनलाइट बहुत हर्ष हो तो, वो ये कि, आप किसी ऐसी जगह की तलाश करें जहा डायरेक्ट सनलाइट ना पड़ रही हो, और वहां पे सब्जेक्ट को प्लेस करके देखे। अगर एक्स्ट्रा लाइट की जरूरत होतो एक्सटर्नल लाइट सोर्स या रिफ्लेक्टर का इस्तेमाल करके आप बहुत अच्छा रिजल्ट निकाल सकते हैं। इसके आलावा अगर लोकेशन की इम्पोर्टेंस को देखा जाए तो लोकेशन का सिलेक्शन हमेशा सब्जेक्ट की ऐज और एक्टिवनेस को देख कर ही करना चाहिए। जैसे मान लीजिये की अगर बच्चा (सब्जेक्ट) 1-2 साल की उम्र का हैं और कुछ कुछ चल सकता है या थोड़ा बहोत दौड़ भी सकता हैं तो आपको लोकेशन हमेशा थोड़ी ओपन और लेस कंजस्टेड ढूंढ़नी चाहिए। चाहे आपके सिलेक्शन में अगर पार्क भी हैं, तो पार्क हमेशा बड़ा और खुला होना चाहिए, जहा घने और ऊंचे पेड़ कम हो। ऐसा सेलेक्टशन इसलिए करना चाहिए ताकि आपके सब्जेक्ट (बच्चे) को प्रॉपर जगह मिल सके की वो वाक या रन कर सके। और रन या वाक करते वक़्त ही आपको भी बच्चे के साथ ट्यूनिंग बना के वाक और रन करना पडेगा। अगर आपने बच्चे के साथ साथ वैसा नहीं किया तो आप बच्चे के वो कैंडिड या नेचुरल एक्सप्रेशंस ही कैप्चर नहीं कर पाएंगे। ऐसी कंडीशन में जब बच्चा छोटा होता हैं और एक जगह पे टिक के नहीं रह सकता वैसे में आपका पूरा शूट नेचुरल लाइट या कहिये की सनलाइट के ही भरोसे रहता हैं। ऐसा इसलिए है क्यूंकि आप भागते दौड़ते बच्चे के साथ न ही स्किम्मर ना ही रिफ्लेक्टर और ना ही किसी और चीज़ का इस्तेमाल कर सकते हैं।

वही अगर आपका सब्जेक्ट अगर थोड़ा बड़ा हैं मतलब 5 साल से ऊपर तो आपको फोटोशूट करना थोड़ा आसान हो जाता हैं। ऐसा इसलिए है की बच्चा आपके अनुसार अपने पोसेस और एक्सप्रेशंस दे सकता हैं। आप जो कहेंगे जैसा बताएंगे वैसा वो एटलीस्ट करने की कोशिश करेगा। अच्छी लोकेशन में सनलाइट के अलावा एक और इम्पोर्टेन्ट चीज़ जो ध्यान देने वाली होती है वो होता हैं बैकग्राउंड। अब बैकग्रॉउंड में सबसे ज्यादा जो ध्यान देने वाली चीज़ होती है वो होता है उसका कलर। कलर से मतलब है की बैकग्राउंड में क्या कलर दिख रहा है, आपके अपने कैमरे के फ्रेम में। अब कलर की इम्पोर्टेंस इस तरह से आंकी जाती हैं की बैकग्राउंड के कलर के हिसाब से ही आपको सब्जेक्ट का कॉस्ट्यूम का कलर डिसाइड करना होता है। ऐसा अगर नहीं करेंगे तो बैकग्राउंड और फोरग्राउंड मर्ज हो जाएगा। और मर्ज होने की वजह से फोटोग्राफ में फील नहीं आएगा। आपकी फोटोग्राफ में बैकग्राउंड और फोरग्राउंड में कोई डिफ़्फ़ेरन्स ही नहीं दिखेगा। अक्सर हाई डेप्थ लेंस के रिजल्ट में ऐसा देखा गया है की कलर्स का कंट्रास्ट सेम होने के बावजूद फोटोज में अपील रहता है। मेरा कहने का मतलब है की अक्सर बैकग्राउंड का कलर और सब्जेक्ट

के कस्टम का कलर आलमोस्ट सेम होने के बावजूद फोटोज बहोत अट्रैक्टिव दिखती हैं। ऐसा सिर्फ फोटोग्राफ्स में डेप्थ होने की वजह से होता है। आपकी आँखें आपको बैकग्राउंड और फोरग्राउंड का डिफरेंस आपको भली भाँती दिखा देती है। अब कॉस्ट्यूम के आलावा जो चीज़े इम्पोर्टेन्ट होती है वो होते है प्रॉप्स। वैसे तो प्रॉप्स में बच्चे के सॉफ्ट टॉय के अलावा और भी बहोत सी चीज़ो का इस्तेमाल होता हैं पर मेरे नज़रिये में बच्चे के फेवरेट टॉय के आलावा कुछ बलून्स, वाटर बबल्स,फ्लावर्स वग़ैरा जैसी कुछ लिमिटेड चीज़ें ही प्रॉप्स के रूप में रखनी चाहिए।

हमको ये ध्यान रखना है की हमारा सब्जेक्ट एक बच्चा या एक पोर्ट्रेट है ना की प्रॉप्स हैं। ज्यादातर फोटोग्राफर्स अपने शूट में बहोत ज्यादा प्रॉप्स का इस्तेमाल करते हैं। मेरे हिसाब से ऐसा नहीं करना चाहिए क्यूंकि एक्स्ट्रा प्रॉप्स होने से फ्रेम और सब्जेक्ट डिस्टर्ब होता है और मेन सब्जेक्ट के इमोशंस मिस होने के चांस होते हैं। तो दोस्तों आज के अंक में इतना ही,मिलेंगे आपसे अगली बार अगले टॉपिक को लेकर के, जय हिन्द।

RNI No. : UPHIN/2017/74695, **स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक** - सुरेंदर सिंह बिष्ट, शॉप नं. 3, शान्ति मार्केट, लक्ष्मणपुरी गेट, फैजाबाद रोड, इन्दिरा नगर, लखनऊ - 226016 द्वारा ज्ञान प्रिंटर्स, 207, 208 लेखराज मार्केट-2, इन्दिरा नगर, लखनऊ-226016 से प्रकाशित।
सम्पादक - सुरेंदर सिंह बिष्ट, फोन - 0522-4108575, ई-मेलः infostudionewsup@gmail.com, वेबसाइट : www.studionews.co.in